ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

पौष-माघ, संवत् नानकशाही ५४१

जनवरी 2010 वर्ष ३ अंक ५

संपादक — सिमरजीत सिंह, *एम. ए, एम. एम. सी.*

सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा, *एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव
धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59

एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303
संपादन विभाग 304

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

पत्रिका प्राप्त न होने पर तथा चंदे आदि सम्बंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए मोबाइल नं. 98886-38618 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥
जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥
कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥
माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥ *(पन्ना १३५-३६)*

पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज **'बारह माहा मांझ'** की इस पावन पउड़ी में प्राचीन काल से चली आ रही माघ महीने में तीर्थ-स्नान की परंपरा की पृष्ठभूमि में मनुष्य-मात्र को परमात्मा के सच्चे नाम-सिमरन का सहारा लेते हुए वास्तविक आत्मिक विकास-विगास का गुरमति महामार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि हे मनुष्य-मात्र! तेरे लिए अधिक अच्छा एवं वास्तविक लाभ लेने का रास्ता यही है कि माघ के महीने में तू नेक-जनों, गुरमुखों की संगत कर, उनसे मिलकर प्रभु-नाम के महत्व पर विचार कर, तू गुरमुखों के साथ परमात्मा के नाम की स्तुति रूपी धूल का स्पर्श कर, यही तेरा स्नान है। तू माघ माह में परमात्मा का नाम स्मरण कर और यह अपने तक ही सीमित न रख। इस दात अथवा ऊंची वस्तु को आगे भी वितरित कर। यहां समझने योग्य विचार-बिंदु यह है कि गुरमति में अकेले में प्रभु-नाम जपने से, संगत में रुहानी विचार का अधिक महत्व माना जाता है।

सतिगुरु पातशाह कथन करते हैं कि यह ऐसा कारगर ढंग है कि इससे मन पर चढ़ी कई जन्मों में किये दुष्कर्मों की मैल उतर जाएगी और तेरे मन से अहंकार चला जाएगा। काम और क्रोध के नुकसानदेय विकारी भाव तुझ पर भारी न रहेंगे, न ही मोह अधिक तंग करेगा और लालच रूपी कुत्ता भी तुझे दर-दर नहीं भटकायेगा। इस सच्चे मार्ग पर चलने से तेरा अपना आत्मिक लाभ तो है ही इसके साथ-साथ संसार भी तेरी शोभा करेगा। अठसठ तीर्थों के स्नान से प्राप्त किये जाने वाले जो पुन्य गणना में आते हैं वे जीवों पर दया-भाव दर्शाने में स्वत: मिल जाते हैं भाव माघ महीने में ऐ मनुष्य-मात्र! तुझे हिंसक व्यवहार को छोड़ना होगा।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिस मनुष्य को उपर्युक्त गुण--नेक-जनों की संगत, वह प्रभु बख्श कर देता है वह मनुष्य वास्तव में बुद्धिमान है। जिनको अपना मूल स्रोत परमात्मा मिल गया मैं उन पर सदके जाता हूं। माघ महीने में जिन पर पूरा गुरु कृपालु होता है वे भाग्यशाली लोग मात्र बाहरी स्नान से नहीं बल्कि रूहानी स्नान करने से स्वच्छ होते हैं।
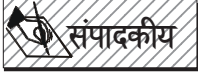
आओ! दशम गुरु जी के पावन प्रकाश पर्व पर परतंत्रता-स्वतंत्रता की ऐतिहासिक और वर्तमान स्थिति पर विचार करें!

मनुष्य-मात्र सदैव ही अपने आप को स्वतंत्रता के वातावरण में पाकर ही आत्म-संतुष्टि तथा खुशी महसूस करता है। परतंत्रता या गुलामी में साधारण मनुष्य बहुत घुटन महसूस करता है। साधारण मनुष्य का अब तक का इतिहास वस्तुतः परतंत्रता की बेड़ियों को तोड़ने के प्रयासों का ही विवरण है। भारतवर्ष में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा और भी अनेकों प्रकार की गुलामी का अनचाहा सिलसिला न केवल सदियों से बल्कि हजारों वर्षों से चलता आ रहा है। इसी अनचाहे सिलसिले को हटाने हेतु और जन-साधारण को सुख-चैन का जीवन उपलब्ध कराने हेतु मध्य युग की पंद्रहवीं सदी में श्री गुरु नानक देव जी महाराज का आगमन हुआ। गुरु जी के आगमन से पूर्व देश का जन-साधारण परतंत्रता को अपनी तकदीर मान चुका था। वह गुलामी की जंजीरों में बंधा हुआ चुपचाप दिन पूरे करने की जीवन-विधि को अपना चुका था। गुरु जी के आगमन से, उसके द्वारा जन-साधारण का परतंत्रता से स्वतंत्रता की दिशा में कदम बढ़ाने का सदियों से रुका हुआ मानवी कर्म फिर से आरंभ हुआ। गुरु महाराज ने जन-साधारण को मानवी स्वतंत्रता का संकल्प देकर इसको हर सूरते-हाल में कायम रखने और इसे उच्चतम विकास-विगास की शिखर तक पहुंचाने हेतु अपनी पावन ज्योति का संचार भाई लहणा जी में करके उनको गुरु अंगद देव जी के रूप में गुरगद्दी पर स्थापित किया। इससे दस सिक्ख गुरु साहिबान की विस्मयजनक गौरवशाली परंपरा का विकास हुआ। दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज इस परंपरा का शिखर हमारे दृष्टिगोचर करते हैं। जिस मानवी स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने हेतु प्रत्येक गुरु साहिब अपने-अपने गुरगद्दी काल में हरेक संभव प्रयत्न करते रहे उसका पूर्णतः स्थापन जन-साधारण ने दशम गुरु जी के गुरगद्दी काल में १६९९ ई को खालसा की सृजना की ऐतिहासिक घटना के रूप में घटित हुए साके में न केवल अपनी आंखों से देखा बल्कि उसकी तो सृजना ही सक्षम सतिगुरु जी ने जन-साधारण में से की थी। अतः दशम गुरु जी के समय में जन-साधारण को न केवल बहुपक्षीय परतंत्रता से ही मुक्ति प्राप्त हुई बल्कि सतिगुरु जी की अपार कृपा-दृष्टि से उसने स्वतंत्रता के भरपूर आनंद का व्यवहारिक अनुभव भी किया। जन-साधारण के गुलामी के सभी बंधन पूर्णतः कट गए--जात-पात तथा छूत-छात के बंधन, विदेशी शासकों-प्रशासकों के जुल्मो-जब्र को चुपचाप सहने की विवशता के बंधन, उनके हाथों अपने सम्मान को पूर्णतः बिना किसी रोष की अभिव्यक्ति के स्वीकार करने के बंधन, अपनी कमाई उनको सौंप देने की मजबूरी के बंधन, उनकी विदेशी तर्ज की जीवन-शैली, उनकी संस्कृति, अपनी मातृभाषा

को पूर्णत: नकार देने की स्थिति के बंधन, धर्म के नाम पर कर्मकांडों के बंधन, अछूत तथा शूद्र कहलवाने के बंधन तथा और भी अनेकों प्रकार के बंधन। दस गुरु साहिबान की आदर्श अगुआई में जब जन-साधारण को अपनी अनेकों प्रकार की परतंत्रता का ज्ञान अनुभव हुआ तो दशम गुरु जी के नेतृत्व में वे इसको तोड़ देने के सक्षम हुए।

उपयुर्क्त वर्णन की गयी सूरते-हाल में दशम गुरु जी का, नवम सतिगुरु श्री गुरु तेग बहादर जी महाराज के गृह में माता गुजरी जी की पावन कोख से मातलोक में प्रकाश होने का दिन समस्त हिंदोस्तान के जन-साधारण के लिए विशेष सौभाग्यपूर्ण दिवस था। गुरु जी के प्रकट होने से ही जन-साधारण सभी प्रकार के बंधनों से मुक्ति पाने में सक्षम हो सका। साईं बुल्लेशाह ने कितना सत्य हमारे दृष्टिगोचर किया है कि यदि गुरु गोबिंद सिंघ जी का आगमन न होता तो हिंदोस्तान में सभी सुन्नी मुसलमान ही होने थे, अन्य सभी का अस्तित्व खत्म हो जाना था। भाई नंद लाल जी द्वारा गुरु जी को *"हक्क हक्क अंदेश गुर गोबिंद सिंघ--बादशाह दरवेश गुर गोबिंद सिंघ"* कथन करने के पीछे गुरु जी का जन-साधारण को बहुआयामी स्वतंत्रता प्रदान करने का ऐतिहासिक सच झलकता है।

ऐसे सतिगुरों का प्रकाश पर्व मनाते हुए हम सभी देशवासियों को यह आत्म-विश्लेषण अवश्य करना चाहिए कि क्या अब भी हम दशमेश गुरु जी द्वारा बख्शी स्वतंत्रता को कायम करने में सक्षम हैं? साथ ही यह आत्म-विश्लेषण भी कि क्या हम ही अन्य जन-साधारण की मानवी स्वतंत्रता में बाधा तो नहीं बने हुए और सर्वोपरि यह गहरा विश्लेषण कि हमारे इर्द-गिर्द का राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक प्रबंध हमारी कौन-कौन-सी स्वतंत्रता को हमसे कैसे-कैसे छीन रहा है और इस दुखदायक स्थिति को रोकने के लिए हमें क्या प्रयत्न, क्या उद्यम करने चाहिए। इस संबंध में गुरबाणी का गहन अध्ययन और इसका तत्वसार स्वयं पर लागू करना सर्वाधिक सहायक सिद्ध हो सकता है। दशम गुरु जी के पावन प्रकाश पर्व पर परतंत्रता-स्वतंत्रता की ऐतिहासिक और वर्तमान स्थिति पर विचार महत्वपूर्ण ही नहीं बल्कि परम आवश्यक भी है।

---

* डॉ. सुभाष चंद्र सचदेवा 'हर्ष', सोनीपत ने 'गुरमति ज्ञान' के २ आजीवन तथा ९८ वार्षिक सदस्य बनाए।

* स. रतिंदर सिंघ, इंदौर ने २०००/- रुपए की रसीद कटाकर एक वर्ष के लिए २०० 'गुरमति ज्ञान' संगत में बांटने हेतु बुक करवाए।

* स. अमरजीत सिंघ, ग्वालियर ने 'गुरमति ज्ञान' के ३६ वार्षिक और आजीवन सदस्य बनाए। वाहिगुरु के चरणों में अरदास है कि वह इन सज्जनों को सदा चढ़दी कला में रखें।

-संपादक

लासानी व्यक्तित्व श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

-डॉ. (मेजर) बलबीर सिंघ*

खालसा पंथ एक अत्यंत ही पावन मार्ग है। एक धार्मिक वातावरण में अमृतधारियों का समूह, जो पवित्र मार्ग पर चलते हुए आध्यात्मिक मंडल में खो जाता है, सिक्ख पंथ का यह अंतिम शिविर है, चरम लक्ष्य की प्राप्ति है। वास्तविकता तो यह है कि यह पूर्णतया की प्राप्ति के लिए आदर्श जीवन-मार्ग है।

दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि गुरु-आत्मा की पूर्ण ज्योति, जो दस गुरु साहिबान में विद्यमान रहकर एक ऐसे समूह में आत्मसात कर गयी, जो कि पवित्र है अर्थात् वह समूह जो असत्य को त्याग कर सत्य को धारण करता है, जो अन्याय की अपेक्षा न्याय को धारण करता है, एकता और समानता को ग्रहण कर प्रतिक्रियावादी विचारों, संकीर्णता और व्यक्ति-पूजा को तिलांजलि देता है। इतना ही नहीं, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार का परित्याग कर सहृदय बन जाता है। मानव-प्रेम उसका आदर्श बन जाता है। वह निर्भय रहता है, परन्तु अन्याय के विरुद्ध डट जाता है। वह डरता है केवल अपनी गलतियों से या फिर ईश्वर से या फिर उन कर्मों से जिनसे कि उसे वर्जित किया गया है, उस मर्यादा के टूटने से जिसके बिना वह खालसा नहीं, वह गुरु का नहीं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'खालसा' के आदर्श की ओर संकेत करते हुए कहा कि तुम्हें अपने जीवन को आदर्शमय बनाना है, तुम्हें 'संतों' के समान पवित्र ईश्वर-भक्त, उदार तथा अनुरागी बनना है और साथ ही महाबलियों के समान शूरवीर, बलवान और त्यागी भी। वे जो दुर्बल हैं, कमजोर हैं, जिन पर अन्याय होता है, जिनका कोई रक्षक नहीं है, जो दलित और अपमानित हैं, उनकी सहायता करना, रक्षा करना, किसी प्रकार के भय को स्वीकार न करना, न किसी को डराना; अन्यायी, चाहे कितना ही कठोर हो, उसकी कठोरता और सख्ती के सामने सिर न झुकाना, उससे डरकर भागना नहीं। कायरता का प्रदर्शन तुम्हें शोभा नहीं देगा। इतना ही नहीं, उन्होंने बताया कि गरीब, मोहताज, निर्धन, अनाथों की सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझना, भीख न मांगना, दान नहीं लेना, धर्म और आचरण को ऊंचा रखना। मन, वचन, कर्म से अपने आप को ऊंचा और महान साबित करना।

भारतीय संस्कृति के प्रकाश-स्तंभ श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की गणना महान त्यागी, पराक्रमी, कवि, साधक, भक्त एवं आध्यात्मिक पुरुष के रूप में की जाती है। उनका युगांतकारी व्यक्तित्व आज भी प्रासंगिक है। उनकी विलक्षण वीरता आध्यात्मिकता से संपोषित हुई थी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मानव समाज एवं धर्म के लिए अपना शीश कटाने वाले महान तेजस्वी, त्यागी, साधक श्री गुरु तेग बहादर साहिब के आत्मज श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी में अनोखी वीरता, त्यागशीलता होना स्वाभाविक था और उन्होंने संत, कवियों से प्रेरित होकर ईश्वर के निर्गुण रूप की उपासना की। उन्होंने सर्वशक्तिमान अकाल पुरख से वर मांगा था:

*२१२, ढुडियाल अपार्टमेन्ट, मधुबन चौक, पीतमपुरा, दिल्ली-११००३४

देह सिवा बरु मोहि इहै सुभ करमन ते कबहूं न टरों ॥
न डरो अरि सो जब जाइ लरो निसचै करि अपुनी जीत करों ॥ *(चंडी चरित्र)*

और इस प्रकार उन्होंने *'संत उबारन'* (संतों की रक्षा करने) और *'दुसट सभन को मूल उपारन'* (दुष्टों को जड़ से उखाड़ फेंकने का) जो प्रण किया उसे पूरा करने के लिए इस देश की मातृभूमि पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया और आज उनके अनुयायी उसी मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं।

गुरु के सिक्ख

गुरसिक्खी का गुलशन महकाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।
रूहानियत की खुशबू फैलाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।
राहों से कांटे चुन ले जाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।
राहों पे फूल ही फूल बिछाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।
तन-मन से मर्यादा को निभाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।
अपने गुरु की खुशियां पाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।
किरत करते, बांट छकते, सेवा-सुमिरन को समर्पित,
ऊंचे-आचरण का लोहा मनवाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।
जुल्मों-जब्र के खिलाफ लड़ाई, लड़ते रहते हैं ये,
धर्म लिए तलवारें भी उठाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।
चेहरा इंसानियत का नफरतें झुलसा देतीं,
मरहम गुरु द्वारा बख्शी लगाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।
सब सिक्खों को हुक्म यही है 'गुरु मानिओ ग्रंथ',
गुरु ग्रंथ साहिब को शीश निवाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।
गऊ-गरीब की रक्षा हेतु रहते हैं, ये सदा तत्पर,
जालिमों-बूचड़ों से इन्हें बचाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।
शहीदियों का इतिहास ये अपने लहू से लिखते रहते हैं,
अपनी आप मिसाल बन जाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।
सिक्खी की आन, बान, शान पे आंच नहीं आने देते,
देखो! धर्म-युद्ध मोर्चे भी लगाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।
'ना को बैरी नही बेगाना' फलसफा है यह इनका,
सुनो! मोहब्बत का पैगाम सुनाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।
खंडे से ज्यादा तीखी होती है यह सिक्खी ऐ 'नूर'!
चलकर धार खंडे की पे दिखलाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।
अमृत छककर सदा आनंद की मनोस्थिति को पाते,
भक्ति में शक्ति का जलवा दिखलाते हैं, ये गुरु के सिक्ख।

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर', बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जालंधर, मो: ९८७२२-५४९९०

संत-सिपाही : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-स. दमनजीत सिंघ**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को किसी एक सम्प्रदाय, कौम अथवा देश का कहना ऐसा लगता है जैसे कोई सुगंधी को अपने तक ही सीमित रखने का प्रयास कर रहा हो। महापुरुष सदैव समूची मानवता की सांझी सम्पत्ति तथा आभूषण होते हैं, परन्तु जिस पवित्र भूमि पर कोई महान आत्मा जन्म लेती है अथवा भूखंड, जो शारीरिक रूप में उसका कार्य-क्षेत्र बनता है, वह हमेशा के लिए हरा-भरा, भाग्यशाली तथा सुख देने वाला बन जाता है। भारत के लिए विशेषत: पंजाब के लिए यह बड़े गर्व की बात है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पवित्र चरणों का स्पर्श इस धरती को प्राप्त हुआ। इस बहुधर्मी तथा बहुभाषीय देश को उन्होंने *"मानस की जात सबै एकै पहिचानबो"* की शिक्षा दी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के आगे पीर भीखण शाह दो कुज्जियां लेकर उपस्थित हुए। वे देखना चाहते थे कि वे हिन्दुओं के गुरु बनेंगे अथवा मुसलमानों के पीर? श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दोनों कुज्जियों पर हाथ रखकर पीर जी का संशय दूर कर दिया। महाराज के युद्धों के दौरान पीर बुद्धूशाह, नबी खां, गनी खां तथा अनेक अन्य मुसलमान श्रद्धालु अत्यन्त विकट परिस्थितियों में उनके काम आए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ये शब्द स्वर्ण-अक्षरों में लिखने योग्य हैं, जो उन्होंने फरमाया था कि सभी मानव एक समान हैं। सभी मानव देहियां पांच तत्वों का संयोग हैं। देहुरा और मसीत में, पूजा तथा नमाज में कोई अंतर नहीं, सभी समान रूप से सम्मान के पात्र हैं।

जात-पात की प्रथा भारतीय समाज में सबसे बड़ी कमजोरी रही है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जिस अद्भुत ढंग से इसका अंत किया उसका उदाहरण भारत के इतिहास में और कहीं नहीं मिलता। उन्होंने एक ही बर्तन में तथाकथित छींबा, नाई तथा झीवर आदि जाति के लोगों को अमृत का पान करवा कर 'खालसा समाज' अथवा 'अकाल पुरख की फौज' के निडर सिपाहियों का स्वरूप दे दिया। मानव मात्र की समानता को दृढ़ करने के साथ-साथ राष्ट्रीयता के निर्माण में यह एक बहुत ही बड़ा कदम था।

पांच प्यारों को अमृत की दात देने के पश्चात उनसे स्वयं अमृत की दात की मांग करने में लोकतंत्र के बीज अंकुरित होते हुए दिखाई देते हैं। राष्ट्र को स्वास्थ्य प्रदान करने में यह एक और ठोस प्रयास था। चमकौर में 'पांच प्यारों' की आज्ञा मान कर काली अंधेरी रात में चल निकलना इस सिद्धांत का शिखर कहा जा सकता है। प्रसिद्ध पंजाबी कवि स. करतार सिंघ बलग्गण ने कितने सुंदर शब्दों में वर्णन किया है: "गोबिंद सिंघ तैनूं पंथ हुकम देवे, इत्थे झट्ट लंघाण दी आगिआ नहीं"। इस आज्ञा के सामने नत्मस्तक होकर शहीद पुत्रों का अंतिम संस्कार करने से पहले ही गुरु साहिब गढ़ी छोड़कर चले गये।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के व्यक्तित्व में योद्धा का स्वरूप इतना प्रबल होकर उजागर

८८९, फेज़ १०, मोहाली।

हुआ है कि उनके व्यक्तित्व के शेष रूपों को साधारण दृष्टि देख ही नहीं सकती। वह व्यक्तित्व कितना आकर्षक होगा जिसके दर्शन-मात्र से सैद खां जैसे जरनैल ने तलवार फेंक दी और अपना सिर, रकाब में सुशोभित महाराज के पवित्र चरण कमलों पर रख दिया! इसका दूसरा किनारा वह है जब साधु वृत्ति वाले विरक्त त्यागियों ने गुरु साहिब के पक्षधर बनकर युद्ध में अपनी जान की बाजी लगा दी। इन युद्धों में आप ने अपने सपुत्रों और अनेक प्रिय सिक्खों की जानें कुर्बान कर दीं। अपना सब कुछ वार कर भी ये निर्लिप्त राजयोगी तथा कर्मयोगी स्थिर अवस्था में विचरण करते रहे। केवल "कथनी" के द्वारा ही नहीं अपुति करनी के द्वारा भी संसार का मार्ग-निर्देशन किया।

अनंदपुर साहिब शाही ठाठ-बाठ का दृश्य था। दूसरी ओर माछीवाड़े के जंगलों में आप ईंट का सिरहाना बनाकर लेटे, पैरों में छाले पड़े हुए थे और शाही फौज मारोमार करती पीछे आ रही थी। दोनों अवस्थाओं में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एक-रस थे। उनका ध्यान अकाल पुरख से जुड़ा हुआ था।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के तीरों की नोक पर सोना लगा होता था। यदि कोई घायल हो जाए तो वह उससे अपना उपचार करवाये, यदि कोई मर गया तो वह सोना उसके अंतिम सस्कार पर लगाया जा सके। युद्ध में भी अपने-पराये का भेदभाव विश्व स्तर पर पहली बार दशम पातशाह के समय में समाप्त हुआ। घायलों को पानी पिलाने के साथ-साथ मरहम पट्टी करने की आज्ञा भाई घनईया जी को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ही दी थी।

आज धर्म, रंग, मजहब, जात-पात तथा छोटे-छोटे प्रांतों में विभक्त मानवता के लिए आपका संदेश उज्जवल है। इसी में विश्व की सुरक्षा का रहस्य छिपा है।

कविता

जपु जी साहिब का नित्य पाठ कर

जपु जी साहिब जी का नित्य पाठ कर हम, आओ जीवन सफल कर लें।
गुरु नानक देव जी के दर्शन इसमें पाकर, झोलियां सुखों से भर लें।
जपु जी साहिब जी का नित्य पाठ करने से, सारे दुख दूर हो जायें।
परमात्मा वाहिगुरु जो मालिक है सबका, उसकी रहमत हो जाये।
जपु जी साहिब जी का नित्य पाठ करने से, सच क्या है, उसको जानें।
जो प्रभु हर जीव में, घट-घट में है, उसको याद कर मन से पहचानें।
जपु जी साहिब जी के पाठ नित्य करने से, मन से अहंकार मिटता है।
पाप, अंधकार, आडंबर, दुख, ईर्ष्या जैसा, रोग दूर भागता है।
जपु जी साहिब जी का पाठ नित्य करने से, मन पवित्र होता है।
बर्तन-रूपी हमारे मन की सफाई का, मार्ग प्रशस्त होता है।
जपु जी साहिब जी के पाठ को, जीवन में समझें और अपनायें।
रास्ता जो बतलाया गया इसमें, उसको पढ़ जीवन सफल बनायें।
जपु जी साहिब का पाठ नित्य करने से, ज्ञान पाकर, अज्ञान मिटायें।
किरत करें, नाम जपें, बांटकर खायें और उसकी रजा में अपने को चलायें।

-स. अवतार सिंघ, सस्ता वस्त्र भंडार, नाका रामनगर रोड, फैजाबाद (यू. पी.)। मो: ९२३६८६००३५

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का शौर्य-संदेश

*-डॉ दीनानाथ शरण**

दशम पातशाह गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न इतिहास-पुरुष थे जो संत-नायक भी थे और योद्धा-नायक भी। अपनी युगीन परिस्थितियों के अनुरूप उन्होंने शास्त्र और शस्त्र अर्थात् कलम तथा तलवार दोनों पर ही जोर दिया। उनका स्पष्ट कथन था :

हम इह काज जगत मो आए ॥
धरम हेत गुरदेव पठाए ॥
जहां तहां तुम धरम बिथारो ॥
दुसट दोखीअनि पकरि पछारो ॥ (बचित्र नाटक)

वास्तव में यही उस वक्त की मांग थी। अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध उन्होंने जूझ मरने का संदेश दिया :

जब आव की अउध निदान बने अत ही रन मैं तब जूझ मरों ॥

पुनः उन्होंने कहा :

जूझ मरो रन मैं तजि तुम ते स्याम इहै बरु पावै ॥

यही सामयिक आवश्यकता थी, क्योंकि मुगल शासकों से जनजीवन त्रस्त था, पीड़ित था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कविता में शौर्य-भावना इसी की पवित्र प्रतिक्रिया में प्रकट हुई थी। निराश और हताश जनता में उन्होंने उमंगोत्साह का संचार किया। उनकी वीर-भावना युगानुकूल आकांक्षा थी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के काव्य में शौर्य-भावना की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। उनका युद्ध-कर्म धर्म का ही स्वरूप है :

धरम चलावन संत उबारन ॥
दुसट सभन को मूल उपारन ॥

गुरु जी ईश्वरीय आज्ञा से ही युद्ध के लिये प्रेरित होते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने काव्य में युद्ध का वर्णन बहुत जमकर किया है अनेक छंदों में, अनेक अलंकारों में। बचित्र नाटक, चंडी चरित्र आदि इसके उदाहरण हैं।

निःसंदेह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ओज और शौर्य के लासानी कवि थे। आज भी उनको वीर-भावना से, शौर्य से तत्काल प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। आज पूरे विश्व में आतंकवाद के काले बादल छाये हुए हैं। कई देशों में कई जगह आतंकवादियों के निर्मम प्रहारों और अत्याचारों से मानवता पीड़ित हो रही है। आज उनसे पूरी ताकत के साथ फौरन निपटने की आवश्यकता है। दुष्टों के आगे दीनता नहीं, वीरता चाहिये।

प्राचीन काल से समय-समय अन्याय तथा जुल्म के विरुद्ध शस्त्र उठाये जाते रहे हैं तभी अन्याय तथा जुल्म को रोका जा सकता है।

महान पुरुष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी ऐसी ही परिस्थितियों में हमें तलवार उठाने का संदेश दिया था। आज दुनिया के तमाम देशों के 'सत्ता-शीर्ष' पर बैठे नेताओं को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज के शौर्य-संदेश से प्रेरणा ग्रहण करने की आवश्यकता है।

**दरियापुर गोला, बांकीपुर, पटना-८०००४ (बिहार)*

मानस की जात सबै एकै पहिचानबो

*-स. सुरजीत सिंघ**

'मानस की जात सबै एकै पहिचानबो' की आवाज बुलंद करने वाले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने एक ऐसे पंथ की स्थापना की जिसमें वर्ग-भेद का कोई स्थान नहीं था। यह एक ऐसा सिद्धांत था जिसने मानव-प्रेम का आधार तैयार किया। आत्म-सम्मान एवं प्रतिष्ठा की भावना ही उनकी पूंजी थी। इतिहास में ऐसे उदाहरण विरले ही मिलते हैं जिन्होंने धर्म, संस्कृति व राष्ट्र की आन, बान और शान के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। वीरता और बलिदान का आदर्श प्रस्तुत करने वाली यह महान शख्सियत विश्व इतिहास में अपना लासानी स्थान रखती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को न तो सत्ता चाहिए थी और न ही सत्ता-सुख। उनका विषय तो शांति और समाज-कल्याण था। कश्मीरी पंडितों की रक्षा हेतु ९ वर्ष के बाल श्री गोबिंद राय जी अपने पिता को स्वयं आत्मोसर्ग हेतु प्रेरित करते हुए कहते हैं कि बलिदान हेतु आपसे बढ़कर पवित्र आत्मा और कौन-सी हो सकती है? श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने पत्र 'जफ़रनामा' में लिखते हैं--औरंगजेब! तुझे प्रभु को पहचानना चाहिए तथा प्रजा को दुखी नहीं करना चाहिए। कुरान की कसम खाकर तूने कहा था कि मैं सुलह रखूंगा, लड़ाई नहीं करूंगा, यह कसम तेरे सिर पर भार है, तू अब इसे पूरा कर।

वास्तव में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का किसी से वैर नहीं था। उनके सामने एक तरफ पहाड़ी राजाओं की ईर्ष्या पहाड़ जैसी ऊंची हो गई थी तो दूसरी ओर औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता की आंधी लोगों के अस्तित्व को लील रही थी। ऐसे समय में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने समाज को एक नया दर्शन दिया--आध्यात्मिक स्वतंत्रता की प्राप्ति हेतु पांच ककार धारण करना। जफ़रनामा में स्वयं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी लिखते हैं--जब सारे साधन निष्फल हो जायें, तब तलवार उठाना न्यायोचित है। धर्म एवं समाज की रक्षा हेतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १६९९ ई में खालसा पंथ की स्थापना की। खालसा अर्थात् खालिस (शुद्ध), जो मन, वचन एवं कर्म से शुद्ध हो तथा समाज के प्रति समर्पण का भाव रखता हो। सिक्खों में धर्म एवं समाज के लिए स्वयं को बलिदान करने का जज्बा था। गुरु जी ने पहाड़ी राजाओं एवं मुगलों से कई बार युद्ध किया। युद्ध के मैदान में उनकी उपस्थिति ही सिक्ख सैनिकों में उत्साह एवं स्फूर्ति पैदा कर देती थी। 'चंडी चरित्र' में लिखा सवैया शूरवीरों के सदैव सम्मुख रहता था :

देह सिवा बरु मोहि इहै सुभ करमन ते कबहूं न टरों ॥
न डरो अरि सो जब जाइ लरो निसचै करि अपुनी जीत करों ॥

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का एक और उदाहरण उनके व्यक्तित्व को अनूठा साबित

(शेष पृष्ठ १६ पर)

**६१६/१, सैनिक कालोनी, रुड़की (हरिद्वार, उत्तराखंड)-२४७६६७, मो: ०९८३७२५६००३*

बचित्र नाटक में चित्रित सामाजिक दृष्टिबोध

*-डॉ. आशा अनेजा**

शाश्वत युग-पुरुष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को आने वाली पीढ़ियों तक आदर सहित स्मरण किया जाता रहेगा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एक ऐसे अनूठे युग पुरुष हैं जिनसे भारत की आत्मा उज्ज्वल हुई है। ज्ञान में उन्नत, हृदय से विशाल, विचार से स्पष्ट, विषम परिस्थितियों में अटल गुरु जी ने अन्याय और अत्याचार का घोर विरोध किया। गुरु जी को न तो अपने शरीर से मोह था न परिवार का, न धन-संग्रह की लालसा थी और न ही राज्य-प्राप्ति की लिप्सा। साहस और स्वाभिमान की इस साकार मूर्ति ने लोक-कल्याण के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय में लोग धर्म-स्वरूप को भूल कर कर्मकाण्डों में उलझ चुके थे। भेदभाव और ऊंच-नीच की ऊंची-ऊंची दीवारें उनके बीच खड़ी थीं। मानवता को आधार बना गुरु जी ने लोगों के भीतर प्रेम, सेवा, त्याग, सदाचार जैसे मानवीय गुणों को जागृत करने का प्रयास किया। वर्ग-भेद और अंधविश्वास से उन्हें मुक्त कर एक नया रास्ता दिखाने का प्रयास किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी सामाजिक दृष्टि का खुले रूप में चित्रण 'बचित्र नाटक' में किया है। समाज को व्यवस्थित तथा एकता के सूत्र में बांधने के लिए उन्होंने मत-मतान्तरवाद, कर्मकांड, मूर्ति-पूजा, चमत्कार-प्रदर्शन आदि बाहरी आडंबरों तथा परम्पराओं का घोर विरोध किया।

उस समय जनता अनेक मत-मतान्तरों में विभाजित थी। कोई वैष्णव, कोई शैव और कोई शाक्त था। कहीं राम की पूजा, कहीं कृष्ण-लीला तो कहीं सिद्ध-नाथों की योग साधना को धर्म का नाम दिया जा रहा था। परमात्मा की सच्ची भक्ति कहीं खो गयी थी। अनेक साधु-संतों ने परमात्मा के स्वरूप को न पहचान कर अपने-अपने पंथ बना रखे थे :

परम तत्त किनहूं न पछाना ॥
आप आप भीतरि उरझाना ॥ *(अध्याय ६:१७)*

यही लोग मूर्ति-पूजा को भी बढ़ावा दे रहे थे और आम जन भावना में बहते हुए मूर्तियों के समक्ष इस तरह नत होते थे मानो साक्षात प्रभु को प्रणाम कर रहे हैं। मूर्ति-पूजा के लिए वे धूप-दीप नैवेद्य को भी साथ लेते थे। **'सूक्षम'** को भुला कर **'स्थूल'** को ग्रहण करने की यह प्रवृत्ति गुरु जी को मान्य नहीं थी। वे इस पद्धति को आत्मा की अवनति की ओर जाने वाला मार्ग मानते थे। मूर्ति-पूजकों की कटु आलोचना करते हुए उन्होंने कहा :

ताहि पछानत है न महा पसु जा को प्रतापु तिहूं पुर माही।
पूजत है परमेसर कै जिह के परसै, परलोक पराही ॥
पाप करो परमारथ कै जिह पापन ते अति पाप लजाही ॥
पाइ करो परमेसर के जड़ पाहन मैं परमेसर नाही ॥ *(अध्याय १:९९)*

***३०६/१, खुड्ड मोहल्ला, पुराना सिविल अस्पताल रोड, लुधियाना।**

गुरु जी ने मूर्ति-पूजा के साथ-साथ अन्य पाखंडों का भी विरोध किया। वे लिखते हैं कि किसी विशेष उद्देश्य के निमित्त उन्हें प्रभु ने धरती लोक पर भेजा है, उसी का उपदेश ही वे देंगे, कोई पाखंड नहीं करेंगे :

इह कारन प्रभु हमै बनायो ॥
भेदु भाखि इहु लोक पठायो ॥
जो तिन कहा सु सभन उचरों ॥
डिंभ विंभ कछु नैक न करों ॥ *(अध्याय ६:५०)*

गुरु जी के अनुसार विशेष वेश धारण करने वाले सच्चे साधु-संत नहीं होते। लोग उनकी वेश-भूषा के कारण ठगे जाते हैं। ऐसे वेश वाले अधिकतर साधु-संत माथे पर चंदन लगा, गले में माला धारण कर, शरीर पर राख लगा कर भोली-भाली जनता को भ्रष्ट करते हैं। ऐसे पाखंडियों के विषय में गुरु जी कहते हैं कि ऐसे लोग नरक में वास करते हैं :

भेख दिखाइ जगत को लोगन को बसि कीन ॥
अंत काल काती कटिओ बासु नरक मो लीन ॥
(अध्याया ६:५६)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तंत्र-मंत्र, तीर्थ-स्थान आदि अनुष्ठान तथा कर्मकांडों का भी विरोध किया। वे जनता को अंधविश्वास और संकीर्णताओं से मुक्त करना चाहते थे। कर्मकांडों में उलझे हुए लोग वास्तविक धर्म से दूर थे। परमात्मा के सच्चे नाम-सिमरन में लोगों का विश्वास जागृत करने के लिए गुरु जी लिखते हैं कि अनेकों ने नासिकाएं मूंद कर समाधियां लगाईं, ब्रह्मचर्य का पालन किया, गले में कंठी तथा सिर पर जटायें बनायीं, कान फड़वा कर योगी बने, पर अंत समय में कुछ भी काम नहीं आया :

किते नास मूंदे भए ब्रहमचारी ॥
किते कंठ कंठी जटा सीस धारी ॥
किते चीर कानं जुगीसं कहायं ॥
सभै फोकटं धरम कामं न आयं ॥
(अध्याय १:६३)

गुरु जी ने मूर्ति-पूजा और तीर्थ-यात्राओं के लोक-दिखावे से प्रेरित रटन को महत्वहीन तथा अनावश्यक बताते हुए कहा:

किनहूं प्रभु पाहन पहिचाना ॥
न्हात किते जल करत बिधाना ॥ (अध्याय ६:११)

गुरु जी ने इन भ्रमों में उलझी अशक्त जनता को धर्म के वास्तविक स्वरूप से जुड़ने के लिए कहा। पुरोहितों तथा रूढ़िवादिता का खंडन करते हुए उन्होंने कहा कि अकाल पुरख से जुड़ो, केवल परमात्मा ही अन्त काल में सहायक हो सकता है :

किउ न जपो ता को तुम भाई ॥
अंत काल जो होइ सहाई ॥ *(अध्याय ६:४९)*

धार्मिक कुरीतियों और रूढ़ियों को दूर कर समाज को व्यवस्थित बनाने के लिए गुरु की आवश्यकता पर बल दिया और कहा कि आत्मिक उन्नति के लिए गुरु की शरण में जाना चाहिए। गुरु और परमात्मा में द्वैत नहीं है। जल में उत्पन्न तरंग की तरह गुरु और परमात्मा एक हैं। गुरु की शरण में आने वाला व्यक्ति ताप, पाप से मुक्त होता है। उसकी वासनाएं तथा तृष्णायें मिट जाती हैं तथा उसमें मानवीय गुण--संतोष, धर्म, ज्ञान, दया आदि जागृत हो जाते हैं। शत्रु का भय उसे भयभीत नहीं करता। परमात्मा उसे सब विपदा में भी सुरक्षित रखता है :

जे जे गुर चरनन रत ह्वैहैं ॥
तिन को कसट न देखन पैहैं ॥
रिध सिध तिन के ग्रिह माहीं ॥
पाप ताप छ्वै सकै न छाहीं ॥ *(अध्याय १३:१४)*

परंतु गुरु-द्रोही व्यक्ति से गुरु तो मुंह

मोड़ते ही हैं प्रभु की दरगाह में भी उन्हें स्थान नहीं मिलता। दुख उनका पीछा करता है तथा आने वाला वंश भी सुखी नहीं होता। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी श्री गुरु नानक देव जी महाराज को धर्म का पातशाह मानते हुए कहते हैं :

बाबे के बाबर के दोऊ ॥
आप करे परमेसर सोऊ ॥
दीन साह इन को पहिचानो ॥
दुनी पति उन को अनुमानो ॥ (अध्याय १३:९)

इस प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने वचनों द्वारा संशयों और आडम्बरों को दूर करने का प्रयास किया, समाज को व्यापक दृष्टि दी तथा वास्तविक धर्म को जीवन में उतारने के लिए सामाजिक दृष्टिबोध दिया। उनका यह शाश्वत संदेश आज के समय की बड़ी मांग है। तीन सौ से अधिक वर्षों के बाद भी गुरु जी एक अग्रगामी सामाजिक रूपांतरकर्त्ता के रूप में हमारे सामने हैं।

कविता

श्रद्धांजलि

*-श्री सी. पी. (दोस्त) भारद्वाज**

उसकी खुशनूदी[१] मिली तो चाहिए फिर क्या मजीद[२]।
'दोस्त' की हर रात दीवाली है, हर दिन रोज-ए-ईद[३]।
मिल गए दोनों गुरु गोबिंद जिसके नाम में,
नाम उसका लब पे आया, है मिरा बख्ते-सईद[४]।
बादशाहे-वक्त औरंगजेब मुल्लाओं से मिल,
पंडितों को दे के लालच करना चाहा था खरीद।
"धर्म अपना हम न छोड़ेंगे", किया यह फैसला,
हो गए सब तंग, उन पे जुल्म जब ढाए मजीद।
आए वो गुरु-शरण में तो अपने वालिद[५] से कहा,
"होइए कुर्बान ताकि जुल्म अब न हो मजीद।"
धर्म की रक्षा में खुद भी हाथ में शमशीर ली,
जालिम और अन्याई जो थे उनकी मिट्टी हो पलीद!
तेरा हमसर कौन कुर्बानी में, ऐ प्यारे गुरु!
तू शहीद इबनेशाही[६], पिसर[७] भी तेरे शहीद।
बाद तेरे भी धर्म का सिलसिला चलता रहे।
पंथ तूने इक बनाया "खालसे" तेरे मुरीद[८]।
त्याग, सच्चाई, धर्म से प्यार, खालसा के हैं गुण,
'दोस्त' हम को दे गए, दशमेश यह शिक्षा जदीद[९]।

१. कृपा, २. अधिक, ३. खुशी का दिन, ४. सौभाग्य, ५. पिता श्री, ६. बलिदानी का बेटा, ७. पुत्र, ८. चेले, ९ नई।

*H.No. 869, Sec. 13, Kurukshetra-136118, Ph: 01744-225941

श्री गुरु हरिराय साहिब जी

-स. गुरबख्श सिंघ 'प्यासा'*

सातवें गुरु श्री गुरु हरिराय साहिब का व्यक्तित्व अद्‌भुत था। एक ओर फूल-सा कोमल हृदय तो दूसरी ओर फौलाद जैसे दृढ़ निश्चय। वे सही अर्थों में एक शूरवीर संत थे, जो दीन-दुखियों की सहायता को सदैव तत्पर रहे।

जन्म एवं बाल्यकाल

आपका जन्म १९ माघ सं. १६८६ तद्‌नुसार १६ जनवरी, १६३० को बाबा गुरदित्ता जी के घर, माता निहाल कौर जी की कोख से कीरतपुर (जिला रोपड़) में हुआ। आप बचपन से ही शांत एवं गंभीर स्वभाव के थे। आप मात्र आठ वर्ष के थे, जब आपके पिता जी का देहावसान हो गया।

शिक्षा

आपकी शिक्षा आपके दादा जी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की निगरानी में हुई जो कि स्वयं एक शूरवीर योद्धा थे। इसलिए आपको धार्मिक विद्या, गुरबाणी-विचार आदि के साथ-साथ शस्त्र-विद्या भी दी गयी।

हृदय की कोमलता

गुरु जी के हृदय की कोमलता का अनुमान उनके बचपन में घटी इस घटना से भली-भांति लगाया जा सकता है। एक दिन जब वे अपने बगीचे में सैर कर रहे थे कि उनके खुले कुर्ते (चोले) से उलझ कर कुछ फूल धरती पर गिर पड़े जिससे उनको बहुत दुख हुआ। उनकी ऐसी दशा देखकर उनके दादा जी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने उन्हें यह सीख दी कि चोले को संभाल कर चलना चाहिए। उन्होंने इस सीख का जीवन-भर पालन किया कि जहां तक हो सके, किसी का दिल न दुखे।

शेख फरीद जी के इस श्लोक को उन्होंने पूरी तरह आत्मसात कर लिया था, जो इस प्रकार है :

सभना मन माणिक ठाहणु मूलि मचांगवा ॥
जे तउ पिरीआ दी सिक हिआउ न ठाहे कही दा ॥ *(पन्ना १३८४)*

अर्थात् सब मनुष्यों के दिल बहुमूल्य हीरे हैं। इनको तोड़ना (दुखाना) पाप है। यदि तुम ईश्वर से मिलने के इच्छुक हो तो किसी का दिल न तोड़ो।

विवाह और संतान

आपका विवाह अनूप शहर (उ. प्र.) के निवासी, श्री दया राम जी की सपुत्री बीबी किशन कौर जी के साथ हुआ। आपके दो पुत्र--रामराय और श्री गुरु हरिक्रिशन जी थे।

गुरगद्दी पर पदासीनता

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने भांप लिया था कि उनके बाद गुरगद्दी का दायित्व संभालने के लिए उनके पौत्र श्री (गुरु) हरिराय जी ही उपयुक्त हैं, क्योंकि उनके पांच पुत्रों में से तीन पुत्रों (बाबा अटल राय जी, बाबा अणीराय जी एवं बाबा गुरदित्ता जी) का देहावसान, उनके जीवन-काल में ही हो गया था। बाबा सूरज मल जी का झुकाव दुनियादारी की ओर अधिक था।

श्री (गुरु) हरिराय साहिब के बड़े भाई धीरमल जी, करतारपुर में हुए युद्ध में विरोधी-

*२२, प्रभु पार्क सोसायटी, ओल्ड छानी रोड, वडोदरा (गुजरात)

पक्ष से मिल गये थे। इसलिए (गुरु) हरिराय जी जो उनकी देख-रेख में ही पले-पढ़े थे, उनकी कसौटी पर खरे उतरे। जब आपको गुरगद्दी पर पदासीन किया गया तो आपकी आयु १४ वर्ष की थी।

जैसे कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने स्वयं शस्त्र धारण किए थे एवं रक्षार्थ युद्ध भी किये थे, परन्तु आप ने अनुभव किया कि दीर्घ योजना के अंतर्गत अभी सिक्ख-संगठन को और मजबूत करने की आवश्यकता है, इसलिए श्री गुरु हरिराय साहिब जी ने चाहे २२०० घुड़सवारों की फौज तैयार रखी परन्तु सिक्खी के प्रचार एवं संगठन की ओर अधिक ध्यान दिया, ताकि सिक्खों में नैतिक गुणों का अधिक संचार हो सके और वे गुरमति के मूल उद्देश्य 'सरबत्त के भले' को नि:स्वार्थ सेवा द्वारा साकार कर सकें।

अनोखे शिकारी

गुरु जी को शिकार पर जाना बहुत पसंद था, परन्तु वे जीवों को मारने के स्थान पर उन्हें जीवित पकड़ते एवं अपने बगीचे में लाकर उनको पालते। इस तरह उनका बगीचा एक लघु चिड़ियाघर भी बन गया था।

सिक्खी-प्रचार एवं संगठन-कार्य

सिक्खी के प्रचार के लिए आप ने दोआबा एवं मालवा की यात्राएं कीं। पहाड़ी राजाओं को अहंकार का त्याग कर लोकोन्मुखी अर्थात् हलीमी-राज का उपदेश दिया, मसंद-व्यवस्था को सुदृढ़ किया। यह मसंद व्यवस्था, उनके पड़दादा श्री गुरु अरजन साहिब ने प्रचलित की थी। इसके अंतर्गत दूर-दराज के इलाकों में योग्य सिक्खों की नियुक्तियां की जाती थीं जो गुरमति के प्रचार के साथ-साथ, गुरु-दरबार के लिए सिक्खों द्वारा दी गयी भेंट दसवंध (अपनी नेक कमाई का दसवां हिस्सा) गुरु के दरबार में पहुंचाते थे। ऐसे संचित धन से लोक-भलाई के कार्य किए जाते। इन्हीं दिनों जब आस-पास का इलाका अकालग्रस्त हो गया तो गुरु जी ने पीड़ित लोगों की भरपूर सहायता की जिससे गुरसिक्खी का यश और फैल गया।

लंगर व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना

पूर्व प्रचलित लंगर-प्रथा को और सुदृढ़ बनाया गया, जहां बिनी किसी भेदभाव के हर समय लंगर तैयार मिलता था।

शाहजहां का पुत्र दारा शिकोह, जो उन दिनों पंजाब का गवर्नर था, गुरु जी के लोकोन्मुखी कार्यों से अंदर ही अंदर प्रभावित था, विशेष रूप में अकाल के दिनों में गुरु जी द्वारा की गयी नि:स्वार्थ लोक-सेवा से। कहते हैं कि उसने गुरु के लंगर के लिए जागीर देने की भी पेशकश की थी, परन्तु गुरु जी ने यह कहते हुए इंकार कर दिया कि गुरु का लंगर सिक्खों के प्यार एवं श्रद्धा द्वारा ही चलना चाहिए।

गुरु जी के दवाखाने से दारा शिकोह को स्वास्थ्य लाभ

गुरु जी ने लोक-भलाई के निमित लंगर के साथ-साथ एक उच्च कोटि के दवाखाने की भी व्यवस्था की हुई थी। कुछ नायाब वनस्पतियां आपके बगीचे में भी उगाई जाती थीं। इस प्रकार आपका दवाखाना दूर-दूर तक प्रसिद्ध था।

एक बार दारा शिकोह अजीर्ण रोग का शिकार हो गया। जब इच्छित औषधि कहीं से न मिली और पता लगा कि यह दवा गुरु जी के औषधालय में मिल सकती है तो मांगने पर गुरु जी ने सहर्ष भिजवा दी जिससे वह निरोग हो गया। निरोग होने के पश्चात वह स्वयं गुरु जी का धन्यवाद करने कीरतपुर आया। गुरु-घर के व्यवहार से दारा शिकोह बहुत प्रभावित हुआ।

शाही खानाजंगी एवं औरंगजेब की तख्तनशीनी

१६५७ ई में शाहजहां सख्त बीमार पड़

गया और उसके बचने की कोई आशा न रही। उसने अपने प्रिय बेटे दारा शिकोह को अपने पास बुला कर तख़्त (सिंघासन) उसके हवाले कर दिया। इस पर गृह-युद्ध छिड़ गया। शेष तीनों भाई भी (शुजाह, औरंगजेब, मुराद) तख़्त हथियाना चाहते थे। इसमें दारा शिकोह जान बचा कर लाहौर की ओर भाग गया। उन दिनों गुरु जी गोइंदवाल में थे। गुरु जी के दर्शन करता हुआ दारा शिकोह लाहौर जा पहुंचा। औरंगजेब ने कुटिल चालों द्वारा एवं धौंस जमाते हुए राज सिंहासन हथिया लिया।

गुरु जी का गुरबाणी के प्रति आदर एवं रामराय को बेदखल करना

इन्हीं दिनों गुरु-घर के विरोधियों एवं ईर्ष्यालु व्यक्तियों ने औरंगजेब के कान भरे एवं गुरु जी के द्वारा दारा शिकोह को आशीष देने की बात कही तो कूटनीति से काम लेते हुए औरंगजेब ने गुरु जी को दिल्ली आने के लिए बुलवा भेजा। विचार-विमर्श के बाद गुरु जी ने अपने बड़े सपुत्र रामराय को कुछ मसंदों के साथ, सत्य के प्रति अडिग रहने एवं गुरमति के उसूलों पर पहरा देने की सीख देकर दिल्ली भेज दिया। बादशाह को प्रसन्न करने के यत्न में एक दिन जब उनसे गुरबाणी की एक तुक *"मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर"* के बारे में पूछा तो रामराय ने कह दिया कि यहां *"मिटी मुसलमान की"* नहीं *"मिटी बेईमान की"* है।

गुरु जी को जब इसके बारे में ज्ञात हुआ कि रामराय ने श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी को बदल दिया है तो आप ने उसी समय उसे माथे न लगने का आदेश भिजवा दिया। इससे उनकी गुरबाणी के प्रति आदर की स्पष्ट झलक मिलती है। इस तरह उन्होंने सिक्खों को गुरबाणी का पूर्ण सम्मान करने की ऐसी सीख दी जो अपने आप में बेमिसाल है।

गुरगद्दी एवं देहावसान

आप ने गुरगद्दी के लिए अपने छोटे सपुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन जी को नियत किया एवं ५ कार्तिक सं. १७१८ तद्नुसार ६ अक्तूबर, १६६१ ई. को आपका देहावसान कीरतपुर साहिब में हो गया।

मानस की जात सबै एकै पहिचानबो

(पृष्ठ १० का शेष)

करता है--पांच प्यारे सजाकर फिर उनसे खुद अमृत-दात की याचना करते हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एक संत और सिपाही के रूप में दिखाई देते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एक आध्यात्मिक गुरु के अतिरिक्त एक महान विद्वान भी थे। उन्होंने पाउंटा साहिब में अपने दरबार में ५२ कवियों को नियुक्त किया था। 'जफ़रनामा' एवं 'बचित्र नाटक' श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महत्त्वपूर्ण बाणियां हैं। उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु का दर्जा दिया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता का भी संदेश दिया। राष्ट्र की उदासीनता, निर्बलता, तुच्छता एवं पतन के भाव को दूर करके भारतीयों में नया साहस और बल भर दिया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी मात्र ४१ वर्ष की आयु में प्रभु द्वारा सौंपे गये महान कार्य को सम्पन्न कर ७ कार्तिक, संवत् १७६५ में प्रभु-ज्योति में लीन हो गये। ऐसी शख्सियत को शत-शत नमन्।

बाबा दीप सिंघ जी 'शहीद'

*-श्रीमती शैल वर्मा**

बाबा दीप सिंघ जी का जन्म माघ १४, सं. १७३९ में हुआ। आप जी के पिता का नाम भगता जी और माता का नाम माता जीऊणी जी था। बड़े होने पर बाबा दीप सिंघ जी अनंदपुर साहिब चले गये और दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सेवा में रहने लगे। बाबा दीप सिंघ जी को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हाथों "अमृत-पान" करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बाबा जी की मनोवृत्ति पूरी तरह आध्यात्मिक थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इन्हें गुरबाणी अध्ययन की शिक्षा दी। वे नाम-सुमिरन और गुरबाणी-पठन में लगे रहते थे।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बाबा दीप सिंघ जी को शस्त्र-संचालन में सुप्रवीण किया। बाबा जी वीर योद्धा तथा युद्ध-कला में निपुण थे। बाबा दीप सिंघ जी सुडौल, सुंदर और स्वस्थ एवं गुणवान व्यक्ति थे। उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा लड़े गये युद्धों में अपना युद्ध-कौशल अच्छी तरह निभाया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का भावार्थ (सटीक) किया तो बाबा दीप सिंघ जी ने सबसे पहले यह भावार्थ सुना। वे एक परम विद्वान व्यक्ति थे। गुरु जी के आदेश से आप ने तलवंडी साबो में रह कर सिक्खी का प्रचार-प्रसार किया और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पावन बीड़ तैयार की। तलवंडी साबो में रहते हुये भाई मनी सिंघ जी के साथ मिल कर तैयार की गई पावन बीड़ के अलावा चार और पावन बीड़ें हाथ से लिख कर तैयार कीं जो बाद में चारों तख्तों पर भेजी गयीं। इनमें से एक बीड़ श्री हरिमंदर साहिब में रखी है। सन् १७४८ में बाबा दीप सिंघ जी को 'शहीद मिसल' का जत्थेदार नियुक्त किया गया।

सन् १७५७ ई में अहमदशाह अब्दाली ने अमृतसर नगर पर धावा बोल दिया। श्री हरिमंदर साहिब की इमारत को गिरा कर पवित्र सरोवर को पूर दिया। बाबा दीप सिंघ जी को सूचना मिली तो हाथ में खंडा लेकर दोखियों को उनकी अपवित्र कारवाई के लिए दंडित करने को चल पड़े। दमदमा साहिब तलवंडी साबो से चलते वक्त थोड़े-से सिक्ख साथ थे किन्तु तरनतारन तक पहुंचते-पहुंचते सिक्खों की गिनती पांच हजार तक पहुंच गयी। तरनतारन से आते हुए गांव गोहलवड़ में बाबा जी ने खंडे से एक लकीर खींची और पवित्र श्री हरिमंदर साहिब के हुये अपमान का बदला लेने के लिये जुझारू सिंघों को लकीर से आगे लाने के लिए ललकारा। यहां आजकल गुरुद्वारा लकीर साहिब स्थित है।

सिपहसालार जहान खां अफगान सेना लेकर गोहलवड़ पहुंचा और यहां जम कर युद्ध हुआ। अफगानों के सरदार व सिपाही पीठ दिखा कर भागने लगे। अचानक हुए वार में बाबा जी घायल हो गये। बाबा जी दायें हाथ में खंडा और बायें हाथ से अपना शीश संभाले युद्ध करते हुए गुरु नगरी की ओर चल दिये। बाबा जी ने शूरवीरता की चर्म सीमा को स्पर्श किया

**४८/८, सागर सदन, गांधी नगर, पुलिस चौकी के पीछे, बस्ती-२७२००१, फोन : ०५५४२-२८८५८२*

जिससे एक विस्मादी इतिहास रचा गया। इस युद्ध में चार और जत्थेदार भाई राम सिंघ, भाई बहादर सिंघ, भाई हीरा सिंघ और भाई निहाल सिंघ भी शहीद हो गये। कुछ और नामी सिक्ख भी शहीद हुये। गुरुद्वारा रामसर साहिब के पूरब में बाबा जी का अंतिम सस्कार हुआ। आजकल यहां गुरुद्वारा शहीदगंज साहिब बाबा दीप सिंघ जी सुशोभित है। श्री हरिमंदर साहिब परिक्रमा में जहां उन्होंने अपना शीश अर्पण किया वहां भी बाबा जी की पावन स्मृति में गुरुद्वारा साहिब बना है। उनका ऐतिहासिक खंडा श्री अकाल तख्त साहिब में रखा है जिसके संगतों को दर्शन कराये जाते हैं।

हमारे देश को गर्व है ऐसे जांबाजों पर जिन्होंने शस्त्र और शास्त्रों पर समान अधिकार बनाये रख कर अपने ज्ञान और बहादुरी की मिसाल का प्रमाण एक साथ दिया।

कविता

कृपाण

हमारी बहनें बलात्कार का शिकार न होतीं,
साथ उनके कृपाण जो होती।
गातरे में यह झूलती होती,
तो वे इतनी कमजोर न होतीं।
एक प्रभाव है कृपाण रूहानी।
जुल्म के खिलाफ उठने, रोकने को मनमानी।
मुगल ही नहीं अतीत काल में आये अनेकों,
रहे लूटते देश की स्त्रियों की अस्मत।
जालिम की जाति नहीं होती,
कुचलते-रौंदते मजलूम को,
दलित को नहीं देते इज्जत।
यह नहीं कि होता था जुल्म पहले ही
जब गुलाम थे हम गैरों के।
अपना कोई जोर नहीं था,
जब ताकतवर हुक्मरान थे।
आज भी तो हालात वही हैं।
खालसा की थी जितनी जरूरत,
आज भी है उतनी ही जरूरत।
'कौर' बनाया गुरु गोबिंद सिंघ ने,
ताकि औरत भी हो तगड़ी।
चलें मिला कंधे से कंधा।
तगड़ा इक गठजोड़ बनायें,
पहन दुपट्टा पहन के पगड़ी।
पड़े जरूरत तो लोहा लें,
हाथों में कृपाण हो पकड़ी।
हाथों में कृपाण हो पकड़ी।

-स. जसबीर सिंघ, १२३/१, सेक्टर-५५, मोहाली-१६००५५

आपका पत्र मिला

नवंबर २००९ का विराट अंक

'गुरमति ज्ञान' नवंबर २००९ (बुजुर्ग श्रेणी विशेषांक) के विराट अंक की थकान भरी कमाई/ परिश्रम के बाद उपजी थकावट, आशा है, सुधी-पाठकों की तरफ से मिले उत्साह भरे प्रतिउत्तर में घुल कर, एक तरह की आत्म-तृप्ति प्रदान कर रही होगी, जैसे कि एक स्वस्थ तथा सुंदर संतान को जन्म देने के बाद, नारी की प्रसूति-पीड़ा आत्म-संतोष में विलीन हो जाती है।

वाहिगुरु संपादन मंडल को इससे भी अधिक ऊंची चोटियां विजय करने का सौभाग्य बख्शे तथा धर्म प्रचार कमेटी का विश्वास और अधिक गहरा हो!

-गुरबख्श सिंघ प्यासा
२२, प्रभु पार्क सोसायटी, वडोदरा।

आत्मिक कल्याण का परम पावन स्थान श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर

*-डॉ. अन्जुमन**

विश्व के प्रत्येक धर्म की विचारधारा चाहे कोई भी रही हो परन्तु सब धर्मों का उद्‌देश्य एक ही है—मोक्ष की प्राप्ति। आज का मनुष्य इस बात को भूल चुका है कि उसका मनुष्य रूप में जन्म क्यों हुआ है? अनगिनत जन्मों के पश्चात् उसे मनुष्य-जन्म क्यों प्राप्त हुआ है? हम केवल संसार की बनी सुख-सुविधाओं में ही उलझ कर रह गये हैं। मनुष्य पांच तत्त्वों का बना है, विभिन्न मूर्तियों, तस्वीरों आदि की उपासना करता है, जो कि दो अथवा तीन तत्त्वों की बनी हैं। यदि यह चाहे तो मनुष्य-जन्म के रहते ही उस परमात्मा की भक्ति, नाम-सुमिरन एवं परोपकार कर जन्म-मरण के बंधनों से मुक्त हो सकता है।

पंजाब में कई धार्मिक स्थान हैं जिनके दर्शनोपरान्त हम मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं, जिनमें से श्री अमृतसर में स्थित **'सचखंड श्री हरिमंदर साहिब'** एक हैं। श्री हरिमंदर साहिब में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं को अंदर प्रवेश करते ही ऐसी अद्‌भुत शांति प्राप्त होती है कि वे अपने सारे दुख और क्लेश भूल जाते हैं। श्री हरिमंदर साहिब में यह महानता इसलिए भी है क्योंकि विभिन्न समयों पर विभिन्न महापुरुष इस स्थान पर आते रहे और मनुष्य को मोक्ष प्राप्ति का साधन अमृत-बाणी प्रस्तुत करते रहे।

सिख धर्म के प्रवर्त्तक श्री गुरु नानक देव जी का श्री हरिमंदर साहिब वाले स्थान पर आकर एक तालाब के किनारे, बेरी के नीचे बैठ कर सच्चे अकाल पुरख की सच्ची प्रशंसा हेतु शबद-कीर्तन करने का जिक्र मिलता है।

इस स्थान पर बेरियों के पेड़ों के झुंड थे, बड़ा ही सुंदर दृश्य था। दूर-दूर से लोग गुरु जी के दर्शनों के लिए आने लगे। गांव सुलतानविंड का चौधरी भाई तारा भी आया। उसने प्रसाद तैयार करवाया और वहां पर उपस्थित लोगों को बांटा। इस पर गुरु जी ने इस स्थान के प्रसिद्ध होने के बारे में कहा कि यहां पर ऐसे ही प्रसाद बांटा जाता रहेगा।

सुलतानपुर, तरनतारन, पट्‌टी, झबाल के क्षेत्र के लोग सखी सरवर की बहुत पूजा करते थे। गुरु जी गांव वैरोकी के घमंडी पीर शाह बख्तियार को मिले, जो कहता था कि हिन्दुओं को वह निंबू की तरह निचोड़ देगा। गुरु जी ने सबके सामने उसे एक निंबू निचोड़ने के लिए दिया। वह उसको नहीं निचोड़ पाया। गुरु जी का कथन व्यवहारिक रूप में बरता : *"बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥"*

सन् १५३७ ई को भाई लहणा जी को श्री गुरु नानक देव जी ने उपदेश दिया था कि इस स्थान पर धर्म, मोक्ष तथा नाम-बाणी के प्रवाह चलेंगे, इसलिए इस स्थान की सेवा और संभाल करनी। इस स्थान पर एक बड़ा नगर बसेगा, जो सारे संसार में प्रसिद्ध होगा।

गुरु जी सुलतानपुर लोधी अपनी बहन नानकी से मिलने जब भी आते-जाते थे तो इस स्थान पर रुकते थे और संगत करते थे।

**पत्नी स. बलजीत सिंघ, गांव-धैलपुर, डाक: तलवंडी लाल सिंघ, जिला गुरदासपुर (पंजाब)*

सन् १५५२ में श्री गुरु अमरदास जी गुरगद्दी पर विराजमान हुए थे। इनके चार वर्ष बाद अकबर तख्त पर बैठा था। सन् १५६४ ई में गुरु जी ने धर्म-प्रचार के लिए २२ केन्द्र स्थापित किये, जिन्हें २२ मंजियों के नाम से जाना गया। इसके मुखी बाबा बुड्ढा जी थे। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाई गई इस विचारधारा ने घमंडी ब्राह्मणों के घमंड को तोड़ा और जनसाधारण को धर्म की सही पहचान करवाते हुए, जात-पात, ऊंच-नीच के भेदभाव को खत्म करने के लिए बाउलियों, सरोवरों, कुंओं आदि का निर्माण करवाया, कर्मकाण्डों का खंडन किया। कुछ ईर्ष्यालु पंडितों ने ईर्ष्या के कारण अकबर बादशाह के दरबार में शिकायत की। मई १५६४ ई में अकबर ने श्री गोइंदवाल साहिब आकर गुरु के लंगर में अमीर, गरीब और अपाहिज लोगों को एक ही पंक्ति में बैठे भोजन करते देखा तो वह प्रसन्न हो गया।

श्री गुरु अमरदास जी ने अपनी सपुत्री बीबी भानी जी की शादी भाई जेठा जी (श्री गुरु रामदास जी) से करवाई। भाई जेठा जी ने २८ वर्ष श्री गुरु अमरदास जी की सेवा की। श्री गुरु रामदास जी के सपुत्र बाल अरजन देव जी की रुचि देख कर गुरु जी ने उनके बारे *"दोहता, बाणी का बोहिथा"* कहा।

सन् १५७१ में श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु रामदास जी को कहा कि यहां पर एक ऐसा धार्मिक केन्द्र स्थापित किया जाए जिससे लोग सुख, आनंद अनुभव किया करें। श्री गुरु अमरदास जी १ आश्विन सं. १६३१ तद्नुसार १ सितंबर १५७४ को गोइंदवाल साहिब में ज्योति जोत समा गये।

इस नगर को आबाद करने के लिए चौथे गुरु जी ने अकबर के समय परगना झबाल के गांव सुलतानविंड, तुंग, गुमटाला और गिलवाली की पांच सौ बीघे जगह ७०० रुपये में खरीद कर नगर के मध्य में अपने परिवार के रहने के लिए एक छपरी तैयार करवाई। यह स्थान गुरु बाजार में स्थित "गुरु के महल" के नाम से प्रसिद्ध है। आस-पास से दूर-दूर की संगतें गुरु जी के दर्शनों और सेवा के लिए आने लगीं। बाबा बुड्ढा जी, भाई गुरदास जी, भाई चंद्र भान, भाई रूप राम आदि सेवा-संभाल और प्रचार-कार्य करने लगे।

इस क्षेत्र में पानी की कमी होने के कारण गुरु जी ने एक सरोवर तैयार करने का कार्य शुरू करवाया। १५७० से १५८८ तक संतोखसर बन कर तैयार हो गया। यह सुंदर गुरुद्वारा आज नगर पालिका कार्पोरेशन दफ्तर के सामने स्थित है।

चौधरी दुनी चंद पट्टी क्षेत्र का एक अमीर और घमंडी पुरुष था। उसकी छोटी बेटी का नाम रजनी था। वह गुरु और अकाल पुरख में विश्वास रखने वाली थी, जबकि उसका पिता उसकी इस बात से बहुत नाराज था। इसी कारण १५७६ में उसके पिता ने उसकी शादी एक पिंगले से कर दी। बीबी रजनी को अकाल पुरख पर अटूट विश्वास था :

सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ॥

(पन्ना ४६७)

वह 'गुरु के चक्क' (अमृतसर) पहुंच गई। अपाहिज पति को उस तालाब के किनारे बेरी की छाया में बिठा, स्वयं गुरु के लंगर से भोजन लेने चली गई। उस अपाहिज ने एक अचंभा देखा कि बेरी के नीचे तालाब में कौआ पानी में डूब कर जब बाहर निकला तो वह हंस बन गया था। उसने पहले अपना एक पांव फिर सारा शरीर उस तालाब में डुबो दिया। बाहर

निकला तो देखा कि एक कुष्ठ रोगी, अपाहिज शरीर के स्थान पर एक तंदरुस्त व्यक्ति खड़ा है। जो उंगली उसने बाहर रखी वह बीबी रजनी के सामने तालाब में डुबोई और वह भी ठीक हो गई। बीबी रजनी को भी विश्वास आ गया। फिर वे दोनों श्री गुरु रामदास जी को बताने के लिए गये तो गुरु जी ने कहा :

सतिगुरु पुरखु अंम्रित सरु वडभागी नावहि आइ ॥
उन जनम जनम की मैलु उतरै निरमल नामु द्रिड़ाइ ॥ *(पन्ना ४०)*

श्री गुरु रामदास जी इस पवित्र सरोवर के किनारे बैठ नाम-सुमिरन करते और बाल अरजन देव जी उस समय प्रभु-चिंतन में बैठते थे।

सन् १५७७ में यहां नगर आबाद कर, गुरु जी ने इसका नाम "गुरु का चक्क" रखा। लोग इसे 'रामदास पुरा' भी कहने लगे।

श्री गुरु रामदास जी ने इस विलक्षण परम पावन स्थान को बनाते हुए अमृत सरोवर बनवाने का काम शुरू करवाया। जहां आज हरि की पौड़ी है वहां से सरोवर की खुदाई शुरू करवाई।

बीबी रजनी की तरह अपने दुख, रोग और कष्टों को दूर करने के लिए दूर-दूर से संगत श्री अमृतसर के दर्शन-स्नान करने के लिए यहां आने लगी। यहां स्नान उपरांत हरि-यश श्रवण करने की व्यवस्था है जिससे मन-तन की आरोग्यता यकीनी है :

करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा ॥ *(पन्ना ६११)*

यह सबका सांझा तीर्थ बन गया। सरोवर के मध्य पवित्र स्थान को छोड़ कर बाकी खुदाई करवाई गई। सन् १५८१ में सरोवर तैयार होने पर दर्शनी ड्योढ़ी तैयार करवाई गई। इसी वर्ष गुरु जी गोइंदवाल साहिब चले गए और गुरगद्दी अपने छोटे सपुत्र श्री गुरु अरजन देव जी को सौंप कर ज्योति जोत समा गये।

श्री गुरु अरजन देव जी १५८१ से १५८६ तक गोइंदवाल साहिब रहे और वहां भी एक बाउली की उसारी का काम शुरू करवाया और फिर अमृतसर में आकर सरोवर को पक्का करवाया। १ माघ सं. १६४५ (सन् १५८८) में इस सरोवर के बीच सुंदर श्री हरिमंदर साहिब की नींव लाहौर के सूफी पीर साईं मियां मीर जी के हाथों रखवाई।

इस प्रकार प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी से लेकर पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी तक आते श्री हरिमंदर साहिब तथा मुक्ति का स्रोत 'सरोवर' बन कर तैयार हो गया, जहां पर दूर-दूर से संगतें आती हैं, दर्शन, स्नान करती उस परमात्मा का नाम-सुमिरन करती हैं और इस घोर कलयुग के समय में मोक्ष-प्राप्ति का रास्ता तैयार करती हैं।

हम सबको श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन-स्नान करते हुए, गुरु साहिबान द्वारा बताये गये रास्ते पर चलते हुए नाम-सुमिरन करना चाहिए, नम्रता और सच्चाई को अपनाना चाहिए तथा परोपकार करते हुए नाम जपना चाहिए, जिससे मनुष्य को आध्यात्मिक प्राप्ति हो सकती है।
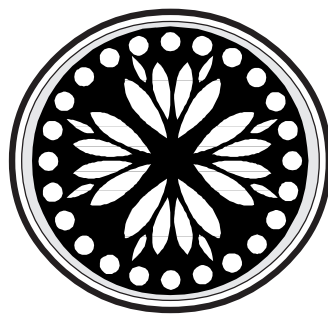
डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ

*-बीबी हरप्रीत कौर**

चारों ओर गुरबाणी का प्रवाह, सारी संगत प्रभु के नाम में लीन दिखाई देती है, हर तरफ मन को लुभाने वाला माहौल, सारे दुखों में सुख का एहसास कराने वाली धुर की बाणी का कीर्तन तथा भटकते एवं तड़पते मन को प्रदान करने वाली शांति, हर प्राणी परमात्मा के नाम में लीन, जी हां, यह आलौकिक दृश्य है श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर का, जहां दुनिया के हर कोने से बिना किसी भेदभाव, जात-पात के संगत आकर विस्मादमी माहौल में जुड़ती है।

श्री गुरु रामदास जी ने सन् १५७७ को इस स्थान पर एक सरोवर का निर्माण आरंभ किया। इसके पहले गुरु साहिब ने जिस पावन शहर की नींव रखी थी उसे 'गुरू का चक्क' या 'रामदासपुर' कहा जाने लगा। अपनी ऐतिहासिकता एवं 'अमृत सरोवर' के नाम पर यह शहर 'अमृतसर' के नाम से विख्यात हुआ। इसी सरोवर को पक्का करवाकर इसके बीच में पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण करवाया था।

'हरिमंदर' दो शब्दों से बना है 'हरि+मंदर'। हरि का अर्थ है प्रभु, परमात्मा और मंदर का अर्थ घर, निवास अर्थात् 'परमात्मा का घर, हरि का घर'। श्री हरिमंदर साहिब इस दुनिया में ऐसा पवित्र स्थान है जो सारी लोकाई को सर्व-सांझीवालता का पैगाम देता है।

श्री हरिमंदर साहिब की नींव रखने का सम्मान श्री गुरु अरजन देव जी ने मुस्लिम सूफी संत साईं मीयां मीर को दिया। एक मुस्लिम सूफी संत को यह सेवा सौंपने के पीछे श्री गुरु अरजन देव जी का उद्देश्य इस दुनिया को सर्वसांझीवालता का संदेश देना था। इस पवित्र स्थान के चार दरवाजे हैं, जो इस बात के प्रतीक हैं कि लोग चाहे किसी भी जाति, धर्म के हों उनके लिए इस स्थान के दरवाजे हर पल खुले रहते हैं। कोई भी इंसान बिना किसी भेदभाव के इस पावन स्थान पर आ सकता है।

श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना करके, पहला प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब में करवाया और बाबा बुड्ढा जी को पहला ग्रंथी नियुक्त किया।

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाई गई लंगर की प्रथा को जारी रखते हुए श्री हरिमंदर साहिब में 'श्री गुरु रामदास लंगर हाल' के नाम पर विशाल लंगर-घर है। यहां पर चौबीस घंटे आई संगत को बिना किसी भेदभाव के पंगत में बिठाकर लंगर छकाया जाता है। श्री हरिमंदर साहिब की चारों दिशायों में जल की सेवा के लिये भी विशेष स्थान बने हैं जिन्हें 'छबील' कहा जाता है।

श्री हरिमंदर साहिब की तीन मंजिलें हैं। धरातल पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश किया जाता है। दूसरी मंजिल पर हस्तलिखित श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश किया जाता है। तीसरी मंजिल पर शानदार गुबंद है और चारों ओर ऊंची-ऊंची गुंबदियां हैं। इस गुबंद में

**सूरता सिंघ रोड, सामने खालसा कालेज पब्लिक स्कूल, जी. टी. रोड, श्री अमृतसर।*

भी श्री गुरु गंथ साहिब का प्रकाश है तथा यहां पर श्री अखंड पाठ होते हैं। पूरब की दिशा में 'हरि की पउड़ी' है, जहां पर संगत अमृत सरोवर से जल छकती हैं। महाराजा रणजीत सिंघ के काल दौरान इस स्थान पर सोना चढ़ाने का काम हुआ तथा मीनाकारी का काम दीवारों पर करवाया गया।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने श्री हरिमंदर साहिब के सामने श्री अकाल तख्त साहिब की सृजना करवाई। गुरु साहिब इस स्थान से सिक्ख कौम को संबोधित करते और दिशा-निर्देश देते थे।

१८वीं सदी में जालिमों द्वारा इस पवित्र स्थान को नुकसान पहुंचाने की बहुत कोशिशें की गईं। समय की सरकारों ने भी इस पर अनेकों बार हमले किये और इसको ढाने की कोशिशें कीं, लेकिन हर बार सिक्खों ने इन जालिमों का डट कर मुकाबला किया, तथा दृढ़ता और सेवा-भावना से इस पावन स्थान की रक्षा की। अनेकों सिघों-सिंघनियों ने इस पावन स्थान की पवित्रता को कायम रखने के लिए शहीदियां भी दीं।

श्री हरिमंदर साहिब सदा से सिक्ख धर्म में एक विशेष स्थान रखता है। प्रतिदिन सैंकड़ों की तादाद में आने वाले दर्शनाभिलाषियों को जब इस अद्भुत स्थान के दर्शनों के साथ शबद-गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के दर्शन होते हैं और गुरबाणी-कीर्तन का मधुर संगीतमयी स्वर जब जीवन-उपदेश देता हुआ उनके कानों में पड़ता है तो हर जिज्ञासु मन ही मन पुकार उठता है:

डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ ॥
बधोहु पुरखि बिधातै तां तू सोहिआ ॥
वसदी सघन अपार अनूप रामदास पुर ॥
हरिहां नानक कसमल जाहि नाइऐ रामदास सर ॥ *(पन्ना १३६२)*

कविता

स्वयं ही हैं स्वयं के शत्रु

*-बीबा जसप्रीत कौर 'जस्सी'**

मनुष्य स्वयं का मित्र भी और शत्रु भी है
हम कुछ करते ऐसा जिससे फलित दुख होता
और न बन पाते स्वयं के मित्र तब हम।
स्वयं ही हैं दुख के बीज हम बोने वाले
स्वयं ही हैं स्वयं के शत्रु।
जो बोते हैं वो ही मिलता
वही पाते जो निर्मित करते
वहीं पहुंचते जहां की करते हम यात्रा
बोये हुए बीज का ही फल हमको मिलता।
फल ही कसौटी परीक्षा है बीज की।
हमारी चाह से नहीं आते फल
जो बोते, उससे ही आते।
चाहते कुछ, बोते हैं कुछ
बोते जहर, चाहते अमृत
दुख और पीड़ा हमारे बोये बीज का फल है।
जहां फलित होता नर्क
फूल आनंद के नहीं
पैरों में पत्थर बंध जाते हैं दुख के।
यदि मनुष्य न उत्पन्न स्वयं क्लेश करेगा,
इस जीवन में तभी आनंद प्रवेश करेगा।

**८३, बसंत विहार, जवद्दी रोड, डुगरी, लुधियाना। मो: ०९५१०४३२८६९*

भजन और भोजन

-ज्ञानी संत सिंघ जी मसकीन

शरीर में खून दौरा कर रहा है। सांस चल रही है। दिल धड़क रहा है। शरीर की सारी हलचल भोजन पर खड़ी है। शारीरिक जीवन भोजन की बुनियाद पर खड़ा है। भोजन का सम्बंध टूटते ही जीवन छूट जाता है। यत्न करके कोई भी साधक भोजन का त्यागी हो सकता है, पर भूख का त्यागी नहीं हो सकता; पानी का त्यागी हो सकता है, प्यास को शरीर में से निकालना बहुत कठिन है।

शरीर की सारी शक्ति भोजन के सहारे पर खड़ी है, पर भोजन से बनी शक्ति से कोई महान विकासशील काम नहीं किए जा सकते और भोजन से बनी शक्ति अगर जरूरत से ज्यादा हो जाए तो विकारों को जन्म देती है। भोजन का स्वाद भूख के सहारे पर खड़ा है। पहले निवाले (बुरकी) में जो स्वाद आएगा वह आखिरी निवाले में नहीं आएगा। एक-एक निवाला जैसे मुंह में डालेंगे वैसे-वैसे स्वाद कम होता जाएगा, क्योंकि एक-एक निवाले से भूख कम होती जाएगी। भूख और स्वाद का आपस में मेल है :

रूपै कामै दोसती भुखै सादै गंढु ॥ (पन्ना १२८८)

भजन आतंरिक खुराक है। भजन से बनी शक्ति से जो काम होंगे वे जगत को सुख देने वाले होंगे। भजन का रस भोजन के रस को धीमा (कम) कर देता है, इसलिए भजन के रसिये भोजन कम खाते हैं :

ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥
(पन्ना ४६७)

ज्यादा भोजन करने वाले मनुष्यों को भोगी कहा जाता है और ज्यादा भजन करने वाले मनुष्यों को योगी कहा जाता है। ज्यादा भोजन करने वाले शारीरिक तौर पर रोगी हो जाते हैं, पर भजन शरीर को स्वस्थ रखता है। बड़ी लकीर के खिंचते दूसरी अपने आप छोटी हो जाती है। भजन का रस और शक्ति भोजन की अहमियत को खत्म कर देती है।

ज्यादा भोजन से बनी शक्ति से शरीर में काम जन्म लेता है, पर भजन से बनी शक्ति से प्रभु प्रकट होते हैं। ज्यादा भोजन करके प्रसन्न होने वाला इंसान इस बात का सबूत है कि इसके पास भजन का कोई रस है ही नहीं। ज्यादा भोजन जहां विकार के साथ जोड़ता है वहीं भजन निरंकार के साथ जोड़ देता है। भोजन से बने जीवन को सतिगुरु जीवन नहीं कहते। दरअसल जीना उसी का है जो भजन करता है :

सो जीविआ जिसु मनि वसिआ सोइ ॥
नानक अवरु न जीवै कोइ ॥
जे जीवै पति लथी जाइ ॥
सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ (पन्ना १४२)

एक सूफी संत का कहना है कि खाना-पीना इसलिए है कि तुम जिंदा रह सको और जिंदगी इसलिए है कि तुम जिकरे-इलाही (प्रभु का गुणानुवाद) करते रहो :

खुरदन बराए जीसतन जिकर करदन असत।

मौलाना रूम का कहना है कि ज्यादा खुराक से तन मोटा होता है पर ज्यादा बंदगी से आत्मा शक्तिशाली होती है :

गर अज़ तुआम आम में शवद फरबा।
तन करीम अज़ तुआम आम में शवद फरबा।

भोज से बनी शक्ति से इंसान दूसरे के मुंह से निवाला छीनने की कोशिश करता है पर भजन से बनी शक्ति से इंसान दूसरे के लिए अपने आप को कुर्बान कर देता है। सो स्पष्ट हुआ कि भोजन की शक्ति छीनने को मजबूर करती है पर

भजन की शक्ति प्राप्त करना है, सब कुछ दे देना। भजन का रस मिलते ही जीवन को शिखर मिल जाता है और जीवन का लक्ष्य हल हो जाता है।

तरतीब और बे-तरतीबी

संसार की सारी उत्पत्ति किसी तरतीब, विधि-विधान के सहारे खड़ी है। जो कुछ भी निर्माण का कार्य हुआ या रचनात्मक कार्य किया जा रहा है उसमें तरतीब (नियम) का होना जरूरी है। ईंटों को किसी खास तरतीब में रखकर ही दीवार बनाई जा सकती है। रेल, मोटर, हवाई जहाज जहां किसी खास विधि-विधान से बनाए गए हैं वहीं इनका प्रयोग भी बाकायदा वैधानिक ढंग से हो रहा है।

आवाज की तरतीब को संगीत कहते हैं। अक्षरों का तरतीब अनुसार उच्चारण कविता को जन्म देता है। शारीरिक अंगों की हरकत अगर तरतीब में हो तो नृत्य बन जाता है। शरीर की इन्द्रियां, नसें, दिल, दिमाग अकाल पुरख ने तरतीब अनुसार बनाए है, :

पुतरी तेरी बिधि करि थाटी ॥ (पन्ना ३७४)

दरअसल जिंदगी तो है ही एक तरतीब का नाम :

जिन्दगी क्या है? तरतीब अनासर दा जहूर।
मौत क्या है? इनही अजजां का परेशां होना।

जीवन के तमाम कर्म अगर बाकायदा तरतीब में हो जाएं तो ऐसे पुरुष को भक्त, गुरमुख या संत कहा जाता है।

जिसका खाना-पीना, पहनना, उठना-बैठना, सोना-जागना, हंसना-रोना अगर कहीं तरतीब में हो जाए तो फिर वही जिंदगी का सही रस मान लेता है। सारा आनंद, सारी खुशियां, जीवन की मर्यादा तरतीब अनुसार चलने में ही हैं। जीवन सारा तरतीब में हो इसलिए बहुत परिश्रम और कठिन साधना की जरूरत है। बे-तरतीबी अनुसार जीवन चलाने में किसी भी साधना या परिश्रम की जरूरत नहीं। सितार को बजाकर उसमें से संगीत निकालना हर इंसान का काम नहीं है, पर उसको तोड़-फोड़ देना यह हर कोई कर सकता है।

कपड़ा सिलकर, संवार कर पोशाक बना लेना, ईंट चिन कर महल बना देना यह एक परिश्रम है, पर कपड़े को फाड़ देना और महल को गिरा देना यह काम हर इंसान कर सकता है।

कोई महान किताब, महान विचारों से पूरी किताब लिख देना हर किसी के वश में नहीं, पर फाड़ना हो तो हर इंसान फाड़ सकता है। मनुष्य ने संतोषी, शील, संयमी, दयालु और विशाल हृदय वाला बनना हो तो एक लंबी साधना की जरूरत है। पर क्रोधी, लोभी, झूठा और कठोर बनना हो तो हर कोई बन सकता है। पानी नीचे की तरफ अपने आप आ जाता है, पर ऊंचाई पर चढ़ाना हो तो बिना दबाव, प्रैशर के नहीं चढ़ सकता।

वैसे तो मनुष्य ने बहुत कुछ संवारा है और शृंगार कर रखने की तरतीब इंसान को आ गई है। जमीन को हाथ लगा कर लहलहाते चमन और खेती में बदलना इंसान का ही काम है, लोहे को संवार कर कार-आमद (उपयोगी) मशीनों में बदल देना इसके हिस्से में ही आया है। कपास को संवार कर सुंदर कपड़े और सोने को संवार कर खूबसूरत गहने बनाना इसकी कारीगरी के सबूत हैं।

पर अफसोस! इन वस्तुओं को संवारने में इंसान ऐसा फंस गया है कि अपना आप संवारना भूल गया है। इसलिए संसार में सब कुछ संवारा हुआ, शृंगारा हुआ मिलता है, अगर कोई नहीं संवरा तो वो है मनुष्य। इसलिए हर वस्तु तकरीबन-तकरीबन अच्छी लगती है, अगर नहीं अच्छा लगता तो आज के मनुष्य का जीवन ही है।

जैसे हमें संवरी हुई, शृंगारी हुई वस्तुएं ही अच्छी लगती हैं, परमात्मा को भी संवरे हुए एवं तरतीब अनुसार जीवन व्यतीत करने वाले ही अच्छे लगते हैं :

आपु सवारहि मै मिलहि मै मिलिआ सुखु होइ ॥
फरीदा जे तू मेरा होइ रहहि सभु जगु तेरा होइ ॥
(पन्ना १३८२)

(मसकीन जी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए पुस्तक 'गुरु-चिंतन' से)

अरदास

*–भाई किरपाल सिंघ**

अरदास एक मुख्य कुंजी है जो परमात्मा की बादशाहत का रास्ता खोलती है। अरदास आत्मा की एक ऐसी पुकार है जो मायूसी और निर्बल अवस्था में अपने से बड़ी एवं शक्तिशाली हस्ती के सन्मुख सुख तथा शांति के लिए की जाती है। साधारणतया यह प्रचलित है कि यह अरदास परमात्मा, जो जीवन या इससे सम्बंधित मुश्किलों से टुकड़े हुए हमारे मन को धैर्य तथा शांति देने की सामर्थ्य रखता है, के आगे की जाती है।

तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा ॥
कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥ *(पन्ना ३८३)*

साइंस के इस युग में एक बुद्धिजीवी इंसानी जीवन को दूसरी यांत्रिक मशीनों की भांति ही समझता है, जो 'कारण और प्रभाव' के नियम में चलते हैं तथा जिनके पीछे कोई मार्गदर्शक नहीं होता। इस दुनिया में मशीनी धारणाओं के विपरीत एक जीव का अध्याय भी है। 'कारण और प्रभाव' का नियम जो मनुष्य के आम काम-काज में देखने में आता है, को बिना नकारे जीवन-सिद्धांत में हर काम के पीछे परमात्मा का हाथ या उसके नियम महसूस किए जा सकते हैं, जिनके अनुसार 'कारण और प्रभाव' का सिद्धांत क्रियाशील है। इस तरह परमात्मा का नियम ही वह स्रोत या आधार है जहां से सारे सिद्धांतों, चाहे वैज्ञानिक या नैतिक हों, का संचार परमात्मा की रजा में होता है। बदकिस्मती से हम केवल गहराई की तरफ नजर न मारते हुए केवल ऊपरी लहरों का ही अनुभव करते हैं।

हम देखते हैं कि एक संसारी बुद्धिजीवी व्यक्ति सभी भौतिक पदार्थ, जो उसके अधीन हैं, के होते हुए भी बहुत मायूस अवस्था में रहता है, सब कुछ होते हुए संतुष्ट नहीं होता, बल्कि और अधिक से अधिक पदार्थों की प्राप्ति के लिए ठीक या गलत ढंग से, पूर्ण शक्ति के साथ इच्छाओं की पूर्ति के लिए काम करता है, लेकिन उसका सारा धन, भंडार, ताकत और शोभा उसे संतुष्टि प्रदान करने में नाकाम रहते हैं। वे बीमारी, कमजोरी तथा मृत्यु के आगे शायद अपने आप को पहले से भी निर्बल महसूस करता है। उसका मन हमेशा अनकहे या काल्पनिक भय का शिकार रहता है। जीवन के समुद्र में किसी किनारे को न पाकर वह बिना किसी चप्पू के इधर-उधर भटकता है। ऐसी दर्दनाक दशा में वह आत्मघात करने की भी कोशिश करता है और यदि यहां से भी बच जाए तो वह ऐसी स्थिति में पहुंच जाता है जहां मृत्यु को ही केवल एक मात्र इलाज समझता है। फिर मृत्यु में भी उसे कोई आराम नजर नहीं आता। वह इस स्थिति के आगे समर्पण कर देता है, क्योंकि उसके पास और कोई रास्ता नहीं रह जाता। यह एक सांसारिक आदमी की दुखभरी कहानी है।

इसके विपरीत वास्तव में एक समझदार इंसान भी पहले वाले व्यक्ति की तरह आराम प्राप्त करने के लिए कोशिश करता है लेकिन किसी और ढंग से। वह अपनी सारी कोशिशों के पीछे प्रभु के हाथ का अनुभव करता है,

**२२१, सेक्टर-१८, पंचकूला (हरियाणा)*

सफलता एवं असफलता से विचलित नहीं होता। वह सब कुछ प्रभु पर ही छोड़ देता है, क्योंकि केवल प्रभु ही जानता है कि उसके लिए ठीक क्या है। यदि कोई फल उसकी इच्छा के अनुसार होता है तो वह उस पर अहंकार नहीं करता, बल्कि प्रभु का धन्यवाद करते हुए उसे स्वीकार करता है और यदि कोई फल उसकी इच्छा के विपरीत निकलता है तो वह उदास नहीं होता बल्कि उस सुप्रीम शक्ति के सामने सिर झुका देता है, क्योंकि वह जानता है कि वह उसकी मदद के बिना कुछ भी नहीं कर सकता।

वास्तव में अरदास मन की फैली वाह्यमुखी प्रवृत्तियों को मन के केन्द्र पर एकाग्र करने का ही नाम है। ठीक उसी तरह जैसे सूर्य की किरणें सारी धरती पर फैल जाती हैं तथा इसके विपरीत यदि उन्हें वापिस कर दिया जाए तो वे अपने स्रोत सूर्य पर इकट्ठी हो जाती हैं।

एक इंसान के दिल में जब कोई ऐसी इच्छा उत्पन्न होती है जिसकी वह पूर्ति नहीं कर सकता या किसी और उलझन में घिर कर मायूस हो जाता है तो वह इसकी पूर्ति या शांति के लिए परमात्मा की तरफ मुंह करता है तथा इस दुखदाई स्थिति में से किसी तरह भी निकलने का यत्न करता है। यह एकाग्रता, जिससे वह परमात्मा से कृपा की मांग करता है, अरदास है। इंसान का हृदय ही परमात्मा का आसन है जो काबा कहलाता है :

तीने ताप निवारणहारा दुख हंता सुख रासि ॥
ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जा की प्रभ आगै अरदासि ॥ *(पन्ना ७१४)*

जैसे ही कोई व्यक्ति पूर्णत: एकाग्र होकर अपने ख्याल को एकत्र करता है तब ही वह परमात्मा की दया, कृपा का हकदार हो जाता है तथा अपने में ऐसी अनजानी शक्ति का अनुभव करता है जो उसने पहले कभी नहीं अनुभव की थी। वह उसे हर तरह की समस्याओं में से बाहर निकलने के योग्य बना देती है। एक निर्मल इच्छा जब जुड़कर प्रबल होती है तो अद्‌भुत काम करती है। जैसे पुरानी कहावत है--'जहां चाह वहां राह'। अरदास वास्तव में अपनी निर्मल इच्छाओं को अपने 'स्रोत', जो कि महान शक्तियों का भंडार है अर्थात् मानसिक एवं आध्यात्मिकता शक्तियों का खजाना है, पर एकत्र करने का ही नाम है। इंसान को यह लाभ मिला हुआ है कि वह परमात्मा द्वारा बनाए गए मंदिर, जिसमें वह खुद विराजमान है, के साथ रहता है। वह अपने आप में रूहानी महासागर की एक बूंद है। आत्मा तथा परमात्मा में मन के पर्दे के बिना कोई रुकावट नहीं है। यदि यह पर्दा निचली इच्छाओं के वेग में से हट जाए तो आत्मा शक्तियों को अपने स्रोत बिंदु से सीधे ही प्राप्त कर सकती है।

आम कहावत है कि जिसका आप ध्यान करोगे उसी का ही रूप बन जाओगे। यदि कोई हिस्सा अपने 'स्रोत' का ध्यान करे तो धीरे-धीरे 'स्रोत' के सारे गुण उसमें प्रकट हो जाते हैं। यह चीज इंसानी रूह पर भी लागू होती है। यह धीरे-धीरे मौजूदा सीमित घेरे से बाहर आकर रुहानीयत को प्राप्त कर सकता है। जैसे ही हमारी आत्मा भौतिक, सूक्ष्म तथा कारन बंधनों से आजाद होती है तो यह खुशी में पुकार उठती है, "मैं आत्मा हूं। मैं वैसी हूं जैसा तू है।"

दुनिया में दो तरह के लोग हैं। एक वे जो अपनी सुरति को बाहर से हटा कर अंतरमुखी होने के महान शक्ति के निजी संग्रह से प्रेरणा हासिल करते हैं। दूसरे वे, जो वाह्यमुखी शक्तियां अथवा मूर्तियों तथा बुतों के आगे अरदास करने पर ही निर्भर हैं। कुछ लोग

(शेष पृष्ठ ३० पर)

बुजुर्गी जीवन के लिए कुछ सुझाव

*-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ**

यह उचित है कि हमारे बुजुर्ग हमारी सामाजिक-पारिवारिक जिम्मेदारी हुआ करते हैं जिसका पालन करना हमारे लिए अति आवश्यक है। इन्होंने उम्र भर दुख-सुख सहन् करके, कमाइयां करके हमें प्रवान चढ़ाया होता है। फिर हम अपने कर्त्तव्य से कैसे मुंह मोड़ सकते हैं? जब उनका वक्त था उन्होंने दिन-रात एक करके हर प्रकार की मेहनत की, स्वयं कठिनाइयां झेल कर हमारे लिए सुख के साधन तैयार किये, हमारे लिए घर-बार, जमीन-जायदाद बनाई। उन्होंने धैर्य-संतोष का जीवन-यापन करते हुए, फालतू व्ययों को रोकते हुए बुद्धिमता एवं विवेकशील जीवन जीया जो हमारे लिए एक जीती-जागती मिसाल बन जाना चाहिए। यह हमारा सामाजिक कर्त्तव्य भी है और पारिवारिक धर्म भी कि हम उनका सर्वप्रथम स्थान पर हृदय की गहराइयों से सत्कार करें और फिर उनकी शारीरिक तथा मानसिक आवश्यकताओं का पूरा-पूरा ध्यान रखें। यह दो-धारा कर्म है। ऐसा करके एक ओर तो हमने अपनी विरासत की संभाल करते हुए अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को निभाना है तथा दूसरी ओर हमने अपनी आने वाली पीढ़ी, अपने बच्चों को बुलंद चरित्र वाले सांस्कृतिक संस्कार देने हैं। यदि हम अपने माता-पिता की बुजुर्गी का सम्मान करते हैं तो हमारे बच्चे हमारे इस व्यवहार को देख रहे होते हैं और उनके मन-अंतर में यह विचार सहजभाव में ही समा जाता है कि बुजुर्गी का सत्कार करना ही चाहिए। ऐसा करके हम अपने आवश्यक कर्त्तव्य तो निभाते ही हैं इसके साथ-साथ हम सुंदर-सुजान समाज का सृजन करने में हिस्सा भी डालते हैं।

हमारे बड़े आदरणीय बुजुर्ग भी आयु-पर्यन्त हमारा हिस्सा रहे हैं। उन्होंने हमको अच्छे तथा और अच्छे सभ्य संस्कार दिये हैं जिनके कारण हम उन पर गर्व करते हैं। यदि बुजुर्ग अवस्था में आकर भी कुछ पारिवारिक और कुछ व्यक्तिगत विचारों के सथ जुड़े रहें तो उनका जीवन-मार्ग सुगम हो सकता है। कहना चाहता हूं कि बूढ़े हो जाने के बहाने में अपने आप को सिकोड़ न लें बल्कि पारिवारिक जीवन-प्रवाह में पहले की तरह ही क्रियाशील योगदान डालें। उन्होंने बहुत भरपूर जीवन जीया होता है, इसलिए पारिवारिक समस्याओं के समाधान के लिए उनके सुझाव बहुत आवश्यक होते हुए बहुमूल्य हो सकते हैं, जिनका परिवार तो क्या सारी बिरादरी, सारा गांव, सारा मोहल्ला लाभ ले सकता है। परंतु वे अपने सुझावों को किसी पर भी कभी न ठोसें बल्कि प्यार-भावना कायम रखते हुए आगे बढ़ते जाएं। यदि वे अपने सुझावों को अपनी व्यक्तिगत इज्जत का प्रश्न बनाने का प्रयत्न करेंगे तो निश्चय ही कड़वाहट आ सकती है, क्योंकि नये दौर की समस्याओं के समाधान भी कुछ अलग हो सकते हैं।

अपने व्यक्तिगत जीवन में वे प्रात: उठकर सैर करने जायें, हल्का व्यायाम करते रहें तथा अधिक दौड़-धूप से बचते हुए किसी चोट आदि

**पत्तन वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर। मो ९४१७१-७५८४६*

से बचते रहें। वे चिंतामुक्त रहने का प्रयत्न करें, क्योंकि अब सभी समस्याएं उनकी संतान का बोझ बन चुकी हैं। वे बच्चों के साथ बच्चे बन जाएं और उनकी छोटी-छोटी बातों का आनंद लें।

इसके साथ ही सबसे आवश्यक बात यह है कि वे अपनी खुराक का अवश्य ध्यान रखें। संतुलित सादा भोजन उनके लिए सुखदायक हो सकता है। भोजन में थोड़ा दूध, थोड़ा दही हो तो अच्छा रहेगा। वे धार्मिक रीति का पालन करते हुए कुछ समय मन-मग्न होकर जाप करें। वे समय-समय पर अपने पुराने दोस्तों-मित्रों, सहपाठियों-सहयोगियों के साथ भी अवश्य मिलें तथा दुख-सुख सांझा करते रहें। उनको अकाल पुरख की रजा में रहने की अच्छी आदत बना लेनी चाहिए कि वह सदैव ही कृपालु होता है। गुरबाणी में इसी पक्ष से जीवन का निर्माण करने के लिए, जीवन निखारने के लिए गुरु साहिब ने यह फरमान उच्चारण किया है:

जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥
आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥
(पन्ना ४७४)

जीवन एक निरंतर कर्म है, इसको करते ही जाइए तथा सम्मान पाइए। बुजुर्ग अवस्था वर भी बन सकती है तथा अभिशाप भी। विकसित देशों में जहां बुजुर्ग व्यक्ति को बहुत सत्कार के साथ देखा जाता है और उनको मान-सम्मान से जीवन जीने के लिए सामाजिक सुरक्षा के तौर पर अच्छा गुजारा भत्ता मिलता है वहां बुजुर्ग अवस्था एक सुंदर वरदान से किसी प्रकार भी कम नहीं कही जा सकती। वहां बुजुर्गों के साथ-साथ चलता है उनका जीवन भर का किया कर्म, जो उनको तन चलाने के लिए रोजी-रोटी भी देता है और मन की ताजगी के लिए सुंदर विश्वास भी पैदा करता है।

विकासशील देशों में कुछ सभ्य विचारों वाले परिवारों को छोड़कर जो प्रभु परमात्मा से विचारशीलता का खजाना प्राप्त करके जीवन जीते हैं वे अपने अधिक आयु के पारिवारिक सदस्यों, बुजुर्गों की सुयोग्य कद्र करते हुए, उनके रोटी-कपड़े का उचित ध्यान रखते हुए उनका दिल-ओ-जान से सम्मान भी करते हैं। शेष बुजुर्गी जहां कठिनाइयों के मुंह आई ही रहती है वहां रुलने के लिए विवश भी हो जाती है। कुछ दान-चंदे के सहारे तथा अस्तित्व में आये वृद्ध-घरों के निवासी बुजुर्गों को मिलकर, उनकी दर्द-कथाएं सुनकर हमारा मन दर्दमयी एवं करुणामयी हो जाता है। उनका जीवन बंद गली-सा बनकर रह जाता है जिसमें सब कुछ रुक कर, समाप्त होकर जीते-जी मरने के समान हो जाता है। हमारे देश में भी ऐसे अनेकों बुजुर्ग हैं जो नर्क समान जीवन जीने के लिए विवश हैं।

ऐसी शोकमयी परिस्थितियां जब भी समाजों में व्याप्त होती हैं तो चेतन्य लोग आगे आते हैं और बिगाड़ों को शोधने के लिए रास्ते तैयार होते हैं। आवश्यकता है सामाजिक चेतना पैदा करने की जो एक आंदोलन बन जाए तथा बुजुर्ग माताओं-पिताओं के जीवन-कल्याण का बड़ा प्रयत्न संभव हो। सरकारी तंत्र इस समय मात्र २५० रुपये मासिक दे रहा है। चाहे इस छोटे से उद्यम का भी कुछ न कुछ महत्व अपनी जगह अवश्य है जिससे इंकार करना उपयुक्त नहीं, परंतु फिर भी इतना अवश्य कहूंगा कि बुजुर्गों को गुजारा भत्ता जो जीवन जीने के लिए दिया जा रहा है उसे उचित नहीं ठहराया जा सकता। क्यों? इसलिए कि बुजुर्ग व्यक्ति का जीवन शरीर की कमजोरी होते हुए

रोगों से भरा होता है तथा इससे अधिक खर्चा दवाइयों का ही आ जाता है, फिर रोटी-पानी कहां और किस प्रकार मिले?

मैं एक नहीं कई बुजुर्गों को जानता हूं जो बहुत ही दयनीय जीवन जी रहे हैं। न उनके पास सिर छुपाने के लिए छत है, न रोटी का साधन और न ही आत्म-सम्मान का जीवन। मात्र धक्के खाना, सहना ही उनका नित्य कर्म बन गया है। यहां मैं मात्र एक ही उदाहरण देना बहुत योग्य समझता हूं। एक माता, जो हमारे घर दूसरे-चौथे दिन आ जाती है, उसकी झोली हर बार आंसुओं से ही भरी होती है। उसका पति कई वर्ष हुए स्वर्गवास हो गया था। उसके तीन पुत्र हैं और तीनों के अच्छे-भले बसते-रसते परिवार। उन तीनों ने माता से चोरी पिता से जमीन अपने नाम करा ली थी और माता को साधनहीन कर दिया था। बहाना यह बनाया कि लड़कियां जमीन ले जाएंगी और यदि माता के नाम कराई तो यह अपने मायके को दे देगी। स्थिति यह है कि अब माता बुजुर्ग अवस्था में नित्य ताने सुनने के लिए विवश हुई पड़ी है।

यह करुण कथा एक माता की है। ऐसी कई अन्य माताएं और पिता हमारे समाज में सम्मानहीन जीवन जी रहे हैं जिनकी कोई सुनवाई नहीं। बहुत आवश्यक एवं समय की जरूरत है कि समाज में बुजुर्गों के सत्कार-सम्मान को बहाल करने के लिए जागृति-अभियान चलाये जाएं जो गंदा व्यवहार करने वाले लोगों को सीधे रास्ते पर आने के लिए विवश कर दें।

अरदास *(पृष्ठ २७ का शेष)*

प्रकृति की महान शक्तियों, जैसे सूर्य, चंद्रमा, बर्फ से ढकी ऊंची चोटियां, पवित्र नदियों के जल, जिन्हें वे सारी कायनात के पीछे काम करने वाली शक्ति का रूप मानते हैं, से प्रेरणा लेने की कोशिश में रहते हैं। इस प्रकार इन सभी को अपने मन की एकाग्रता तथा भरोसे के अनुसार फल की प्राप्ति होती है।

कुछ लोग परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते तथा न ही अरदास करने पर विश्वास करते हैं।

जबकि परमात्मा ही सच्चाई है केवल आत्मा ही उसकी आराधना कर सकती है। यह इंसानी रूहों की भीतरी गहराइयों में विराजमान है। वह आत्मा की आत्मा है। वह हर दृष्टमान रूप-रचना के अंदर है और कोई रचना उससे अलग नहीं। सभी रंग तथा रूप अपनी आभा एवं आकार उसी से ही लेते हैं। चाहे हमें उस पर विश्वास हो या न, हम उसमें रहते हैं और वह हमारा अस्तित्व है।

सच्ची अरदास वाह्यमुखी इच्छाओं को आत्मा के केंद्र-बिंदु पर एकाग्र करने का ही साधन है। यहीं से लोक-परलोक का ज्ञान मिलता है और इधर-उधर भटकने की बजाय केवल भीतरी शक्ति के स्पर्श से ही मुक्ति का रास्ता प्राप्त होता है।

सत्य केवल एक है चाहे विद्वानों ने इसे अलग-अलग ढंगों से बयान किया है। तो फिर उस सदीवी सत्य की खोज क्यों न की जाए जिसके बारे में गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं:

आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ *(पन्ना १)*

तात्पर्य कि परमात्मा आदि से ही सत्य है, युगों के आरंभ से भी सत्य है तथा यह सत्य आज भी है और हमेशा के लिए होगा।

गुरबाणी राग परिचय-२५

राग सारंग

*-स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में राग सारंग की बाणी राग बसंत के बाद क्रमांक २६ पर ५७ पन्नों में (११९७-१२५३) अंकित है। गुरमति संगीत में राग सारंग, सिरीरागु का पुत्र है, जैसा कि राग माला में उल्लेख है :

सालू सारग सागरा अउर गोंड गंभीर ॥
असट पुत्र स्रीराग के गुंड कुंभ हमीर ॥
(पन्ना १४३०)

यह राग दरबारी कानड़ा, मधमाधवी, देवगिरी और मलार नट के मिलने से बनता है। शुद्ध सारंग काफी ठाठ का ऊडव (आरोह में पांच स्वर), खाडव (अवरोह में छः स्वर) राग है। आरोह में गंधार तथा धैवत स्वर वर्जित है और अवरोह में सिर्फ गंधार वर्जित है। गायन का समय दोपहर का है।

राग सारंग, राग बसंत के उल्लासमय राग तथा राग मलार के शीतल राग के बीच की कड़ी है, जिसमें सारंग (चात्रिक) पक्षी के समान जीवात्मा की परमात्मा के प्रति निष्ठा का स्वर सुनाई देता है। राग सारंग की प्रथम इकाई में श्री गुरु नानक देव जी के तीन शबद, दो अष्टपदियां तथा श्री गुरु अमरदास जी की तीन अष्टपदियां रखी जा सकती हैं।

अहंकार त्याग कर जीवात्मा ने जगजीवन के चरणों में स्थान पाया है। गुरु-उपदेश से उसका मन मोहन ने मोह लिया है। उसके मन को प्रभु के प्रेम-रंग में रंगने के बाद धैर्य मिला है। लोक-लज्जा छोड़कर उसका मन निर्मल निरंजन में अनुरक्त है :

अपुने ठाकुर की हउ चेरी ॥
चरन गहे जगजीवन प्रभ के हउमै मारि निबेरी ॥ . . .
मोहन मोहि लीआ मनु मेरा समझसि सबदु बीचारे ॥ (पन्ना ११९७)

सुहागिन जीवात्मा का स्वामी घर पर है, झुक-झुक कर मेघ गरजते-बरसते हैं, कोकिल, मोर, पपीहा, पेड़, पशु, पक्षी आदि प्रसन्न होते हैं, सुहागिन आनंद मनाती और प्रेम में बिलसती है :

ऊनवि घनहरु गरजै बरसै कोकिल मोर बैरागै ॥
तरवर बिरख बिहंग भुइअंगम घरि पिरु धन सोहागै ॥ (पन्ना ११९७)

श्री गुरु नानक देव जी के तीसरे शबद में प्रभु-मिलन का वर्णन है। मेरा प्रभु कभी दूर नहीं है। सतिगुरु के उपदेश से जब मन में विश्वास उपजता है तो वह प्राणाधार साक्षात प्रकट होता है। जिस जीवात्मा के भीतर प्रेम-पदार्थ है वह छिपती नहीं। गुरमुख जीवात्मा युग-युग के लिए अनमोल हरि-नाम अन्तर्मन में धारण किये रहती है :

दूरि नाही मेरो प्रभु पिआरा ॥
सतिगुर बचनि मेरो मनु मानिआ हरि पाए प्रान अधारा ॥ . . .
अंतरि रतन पदारथ हित कौ दुरै न लाल पिआरी ॥
नानक गुरमुखि नामु अमोलकु जुगि जुगि अंतरि धारी ॥ (पन्ना ११९७-९८)

प्रभु से विरह और मिलन के उक्त शब्द-चित्रों को श्री गुरु नानक साहिब ने अपनी दो अष्टपदियों में *'हरि बिनु किउ जीवा मेरी माई'* तथा *'हरि बिनु किउ धीरै मनु मेरा'* में स्पष्ट

**सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१६*

किया है। प्रभु के शबद में लिव लगने से चंचल मति का शमन हो गया। भय को दूर करने वाले प्रभु की प्राप्ति हुई। हरि-रस-पान से तृष्णा मिट गई और सौभाग्य से हरि मिल गया। मनमोहक मोहन ने मेरा मन मोह लिया है। बड़े भाग्य से उसमें लग्न लगी है। सत्य का चिंतन करने से पाप नष्ट हो गये हैं और मन निर्मल प्रेम में लीन है :

चंचल मति तिआगि भउ भंजनु पाइआ एक सबदि लिव लागी ॥
हरि रसु चाखि त्रिखा निवारी हरि मेलि लए बडभागी ॥ . . .
मोहनि मोहि लीआ मनु मोरा बडै भाग लिव लागी ॥
साचु बीचारि किलविख दुख काटे मनु निरमलु अनरागी ॥ *(पन्ना १२३२-३३)*

गुरु नानक साहिब के उक्त शबदों और अष्टपदियों के क्रम में श्री गुरु अमरदास जी ने तीन अष्टपदियों (*'मन मेरे हरि कै नामि वडाई', 'मन मेरे हरि का नामु अति मीठा'* तथा *'मन मेरे हरि की अकथ कहाणी'*) में विचारों को सरस और मधुर रूप से प्रस्तुत किया है। शबद का विचार करके मैं पूर्ण प्रेम में रंग गया हूं। मेरा अहंकार और तृष्णा समाप्त हो गये हैं। मेरे अन्तर्मन में हरि निवास करता है। वही परमात्मा सभी में आत्मा रूप होकर विचरण करता है :

सबदु वीचारि सदा रंगि राते हउमै त्रिसना मारी ॥
अंतरि निहकेवलु हरि रविआ सभु आतम रामु मुरारी ॥ *(पन्ना १२३३)*

राग सारंग में शबदों और अष्टपदियों में प्रभु के प्रति समर्पण के उक्त विवेचन के बाद श्री गुरु रामदास जी और श्री गुरु अरजन देव जी के शबदों को दो वर्गों में रख कर विचार किया जा सकता है। श्री गुरु रामदास जी के १३ शबद भी छ:-छ: शबदों के दो समूहों में हैं, जिनके बीच में एक 'दुपदा' आत्म-कथा से सम्बंधित है। प्रथम छ: शबदों में हरि-मिलन के उपाय सत-संगति, हरि-नाम, जाप, हरि-नाम-अमृत की याचना, गोविंद-प्रीति, नाम में पूर्ण विश्वास और प्रभु-नाम की स्थिरता का विवेचन है। दूसरे छ: शबदों में मन को हरि-जाप करने के लिए संबोधन किया गया है। प्रत्येक शबद की प्रथम पंक्ति में 'जपि मन' के साथ प्रभु के विशेष नामों का उल्लेख है :

--जपि मन जगंनाथ जगदीसरो . . . ॥(शबद ८)
--जपि मन नरहरे नरहर सुआमी . . . ॥ *(शबद ९)*
--जपि मन माधो मधुसूदनो हरि स्रीरंगो . . . ॥ *(शबद १०)*

प्रथम तीन परंपरागत संबोधन के बाद चतुर्थ शबद में मूलमंत्र के अनुसार संबोधन है:

जपि मन निरभउ ॥ सति सति सदा सति ॥
निरवैरु अकाल मूरति ॥ आजूनी संभउ ॥ *(शबद ११)*

पांचवें और छठवें शबद में अपेक्षाकृत प्रचलित नामों के जाप का वर्णन है :

जपि मन गोविंदु हरि गोविंदु गुणी निधानु . . . ॥ *(शबद १२)*

जपि मन सिरी रामु ॥
राम रमत रामु ॥ सति सति रामु ॥ (शबद १३)

प्रभु के विशेष सम्बोधन के बाद प्रथम पांच शबदों में हरि की उपमा, हरि के गुण, हरि की व्यापकता, हरि-दरसन-आकांक्षा, हरि-नाम-अमृत का वर्णन है। अंतिम शबद में राम जपि के साथ कलयुग में भक्त-जनों का सम्मान रखने वाले प्रभु-नाम की उपमा की गई है कि जब प्रभु मेरे पक्ष में है तो सब शत्रु और दुख भाग जाते हैं :

राम नाम की उपमा देखहु हरि संतहु
जो भगत जनां की पति राखै विचि कलिजुग अगे ॥

जन नानक का अंगु कीआ मेरै राम राइ दुसमन दूख गए सभि भगे ॥ (पन्ना १२०२)

राग सारंग में श्री गुरु अरजन देव जी द्वारा रचित १३९ शबद हैं जिनकी रचना छः घरों (गायन पद्धतियों) के अन्तर्गत है। इन शबदों में भक्ति के विविध भावों की व्यंजना है। घरु ४ के अन्तर्गत दुपदों की संख्या १०६ है। प्रथम शबद में जीवात्मा की मनुहार पंजाबी की मधुर शब्दावली में है, हे मेरे मनमोहन प्रभु! घर आओ, मैं विनती करती हूं, मैं मान करती हूं, गर्व से बोलती हूं। इन भूलों के होते हुए भी मैं तेरी विनम्र दासी हूं। तुम सदा समीप हो। मैं सुनती-देखती नहीं और भ्रम में भटकती हुई दुख भोगती हूं। जब गुरु कृपा करके अज्ञान का पर्दा उतार देते हैं तो स्वामी से मिलकर मन प्रसन्न हो जाता है। स्वामी जब एक क्षण भी बिछड़ते हैं तो वह अवधि मुझे करोड़ों दिन और लंबे बरस जैसी प्रतीत होती है। यदि मुझे सतसंगति की सहायता मिल जावे तो हरि-प्रभु को प्राप्त कर लूं :

मोहन घरि आवहु करउ जोदरीआ ॥
मानु करउ अभिमानै बोलउ भूल चूक तेरी प्रिअ चिरीआ ॥१॥रहाउ॥
निकटि सुनत अरु पेखत नाही भरमि भरमि दुख भरीआ ॥
होइ क्रिपाल गुर लाहि पारदो मिलउ लाल मनु हरीआ ॥१॥
एक निमख जे बिसरै सुआमी जानउ कोटि दिनस लख बरीआ ॥
साधसंगति की भीर जउ पाई तउ नानक हरि संगि मिरीआ ॥ (पन्ना १२०९)

जीवात्मा की प्रियदर्शन की प्यास वेदना का रूप ले लेती है। मन में धैर्य न रहने पर संत-जन की खोज की जाती है। जीवात्मा उस संत पर बहिलार जाती है जो क्षण भर प्रीतम का दर्शन करा सके। सतिगुर की कृपा से जब प्रिय से भेंट हुई तो उसका चरित देखकर विस्मय हुआ। मैंने कृपालु प्रभु को अपने हृदय (घर) में ही प्राप्त कर लिया जिससे मेरी तपन दूर हो गई। जीवात्मा की मनुहार का यह रूप श्री गुरु अरजन देव जी के घरु २ के प्रथम चउपदे में दिया गया है :

कैसे कहउ मोहि जीअ बेदनाई ॥
दरसन पिआस प्रिअ प्रीति मनोहर मनु न रहै बहु बिधि उमकाई ॥ (पन्ना १२०६)

भटकने के बाद एक स्थिति समरसता की है। प्रभु-मिलन से जीवात्मा में आत्म-रस का सहज स्वरूप प्रकट होता है। श्री गुरु अरजन देव जी के शबदों के घरु १ के तीसरे चउपदे में सुंदर दृष्टांतों से इस भाव का चित्रण है।

अब मेरा विकारों के अधीन होकर नाचना समाप्त हो गया है। सतिगुरु के वचन का आचरण कर सहज भाव से मैंने प्रियतम को प्राप्त किया है। मिलन से पूर्व कुंवारी कन्या सखियों से हंस-हंस कर प्रियतम की बात करती है। साजन के घर के अंदर आने पर मुख पर लज्जा का भाव आ जाता है। जीव कुठाली में डाले सोने की भांति पागल हुआ फिरता है। मैल निकल जाने पर शुद्ध होकर स्थिर हो जाता है। घड़ियाल रात-दिन बजाने वाले के द्वारा बजाये जाने पर बजने के समय की सूचना देता है, जब बजाने वाला उठकर चला जाता है तब वह फिर ध्वनित नहीं होता। घड़े में डाले जाने पर पानी की सत्ता अलग प्रतीत होती है। यदि घड़े के पानी को जल में ही डाल दें तो जल में जल मिल जाता है :

अब मोरो नाचनो रहो ॥
लालु रगीला सहजे पाइओ सतिगुर बचनि लहो ॥१॥रहाउ॥
कुआर कंनिआ जैसे संगि सहेरी प्रिअ बचन उपहास कहो ॥
जउ सुरिजनु ग्रिह भीतरि आइओ तब मुखु काजि

लजो ॥१॥
जिउ कनिको कोठारी चड़िओ कबरो होत फिरो ॥
जब ते सुध भए है बारहि तब ते थान थिरो ॥२॥
जउ दिनु रैनि तऊ लउ बजिओ मूरत घरी पलो ॥
बजावनहारो ऊठि सिधारिओ तब फिरि बाजु न भइओ ॥३॥
जैसे कुंभ उदक पूरि आनिओ तब ओहु भिंन द्रिसटो ॥
कहु नानक कुंभु जलै महि डारिओ अंभै अंभ मिलो ॥४॥ *(पन्ना १२०३)*

श्री गुरु अरजन देव जी के शबदों के साथ ही उनकी राग सारंग की दो अष्टपदियां तथा एक छंद का अध्ययन किया जा सकता है। प्रथम अष्टपदी में सर्वव्यापक प्रभु के प्रताप का वर्णन है। परामत्मा ने विरोधी गुणों वाले तत्वों को पिरो कर सृष्टि-रचना की है। द्वितीय अष्टपदी में परमात्मा के अनेक रूपों की महिमा १२ पदों में दी गई है। अंतिम पद में निष्कर्ष दिया गया है:

सति पुरखु सति असथानु ॥
ऊच ते ऊच निरमल निरबानु ॥
अपुना कीआ जानहि आपि ॥
आपे घटि घटि रहिओ बिआपि ॥
क्रिपा निधान नानक दइआल ॥
जिनि जपिआ नानक ते भए निहाल ॥
(पन्ना १२३६)

राग सारंग में संकलित छंद में सर्वव्यापक प्रभु के दर्शन का वर्णन है। प्रभु के दर्शन उसकी कृपा से होते हैं। वह हृदय धन्य है जो प्रभु-चरणों से प्रीति करता है। प्रभु के चरण संतों की संगति करने वाले को मिलते हैं। उसका अंधकार दूर हो जाता है।

राग सारंग में श्री गुरु तेग बहादर जी के चार शबद हैं। परमात्मा के बिना कोई सहारा नहीं है। प्रभु की आराधना भावपूर्ण निष्ठा से करनी चाहिए। *"मन करि कबहू न हरि गुन गाइओ"* विषयासक्त होकर स्वेच्छापूर्ण कार्य करने से जीवन व्यर्थ गंवा दिया गया है। शरणागत रक्षक, पतित पावन प्रभु से दया की आशा ही सहायक है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्लोकों सहित वारों की संख्या २० है जिनमें राग सारंग में श्री गुरु रामदास जी की रचित वार का विशिष्ट स्थान है। इस वार में पउड़ियों की संख्या सबसे अधिक (३६) है तथा संलग्न श्लोकों में श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित ३३ श्लोक हैं। कुल संलग्न श्लोक ७४ हैं। वार सारंग में संलग्न श्लोकों में चिंतन और दार्शनिक पक्ष प्रधान है। श्री गुरु नानक देव जी ने अपने श्लोकों में जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला है। समाज में परिश्रम से कमाई करना और पात्र व्यक्तियों को दान करना जीवन का व्यवहारिक मार्ग है। बिना अनुभव के प्रभु-ज्ञान के गीत गाना, मस्जिद में भूखे निवास करना, बिना जीविका के कनफटा योगी बनना, गुरु-पीर का वेष बनाकर मांगने जाना तथा समाज से सम्मान पाना उचित नहीं है। ऐसे गुरु या पीर कहलवाने वाले के पांव नहीं पड़ना चाहिए :

गिआन विहूणा गावै गीत ॥
भुखे मुलां घरे मसीति ॥
मखटू होइ कै कंन पड़ाए ॥
फकरु करे होरु जाति गवाए ॥
गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥
ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥
घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ *(पन्ना १२४५)*

संसार से जीवन की विदाई का चित्र पांच पंक्तियों में अंकित किया गया है। मृत्यु ने किसी से न मुहूर्त पूछा है, न तिथि या दिन की जानकारी पूछी है। मृत्यु का प्रयाण भी अद्‌भुत है। कुछ लोग लाद कर चले गये हैं, कुछ ने लाद लिया है और कुछ ने भार लादने के लिए

गठरी बना कर रखी है। कुछ की तैयारी घोड़े पर सवार होने को हो चुकी है तो कुछ सामान संभाल रहे हैं। सुंदर महल, सेवकों के लश्कर और विजय-घोष के नगारे छूट जाते हैं। यह मिट्टी की ढेरी (मानव शरीर) फिर मिट्टी हो गई है :

मरणि न मूरतु पुछिआ पुछी थिति न वारु ॥
इकन्ही लदिआ इकि लदि चले इकन्ही बधे भार ॥
इकन्हा होई साखती इकन्हा होई सार ॥
लसकर सणै दमामिआ छुटे बंक दुआर ॥
नानक ढेरी छारु की भी फिरि होई छार ॥
(पन्ना १२४४)

श्री गुरु अंगद देव जी ने मनुष्य के आने-जाने को वास्तविक स्वामी के आदेश के अधीन माना है। जीव को जैसा हुक्म में लिखा होता है वैसा ही मानना पड़ता है। जीव प्रभु के भेजने पर शरीर धारण करते हैं और बुलावा आने पर चुपचाप उठकर चल देते हैं :

जेहा चीरी लिखिआ तेहा हुकमु कमाहि ॥
घले आवहि नानका सदे उठी जाहि ॥
(पन्ना १२३९)

मनुष्य के संसार में आने की व्याख्या भी श्री गुरु अंगद देव जी ने प्रस्तुत की है: प्रभु के निकट से व्यापारी जीव चला है साथ में प्रभु ने हुण्डी लिख कर दे दी है। जीव व्यापारी अच्छी-बुरी वस्तु खरीदता है। हुण्डी के अनुसार जीव को वस्तु मिलती रहती है। सब व्यापारी इस प्रकार वस्तु खरीदते हैं और माल लाद लेते हैं। उनमें से कुछ लाभ कमाते हैं लेकिन कुछ मूलधन भी गंवा बैठते हैं। हरि-नाम और माया दोनों का व्यापार हुआ। किसको शाबाशी दें? महिमा उन्हीं की है जो अपने जीवन-मनोरथ की राशि पूरी की पूरी बचा कर ले जाते हैं:

साह चले वणजारिआ लिखिआ देवै नालि ॥
लिखे उपरि हुकमु होइ लईऐ वसतु सम्हालि ॥
वसतु लई वणजारई वखरु बधा पाइ ॥
केई लाहा लै चले इकि चलै मूलु गवाइ ॥
थोड़ा किनै न मंगिओ किसु कहीऐ साबासि ॥
नदरि तिना कउ नानका जि साबतु लाए रासि ॥ *(पन्ना १२३८)*

जीवन-मनोरथ क्या है? वह कौन-सी राशि है जिसे प्रभु ने दिया है? यह एक अनुभव-गम्य विषय है जिसके कई पहलू हो सकते हैं। श्री गुरु अमरदास जी ने इसे बोध-गम्य कराने के विचार रखे हैं :-

पराई अमानत क्यों रखी जावे, उसे लौटा देने में ही सुख होता है। गुरु का शबद गुरु के ध्यान में ही टिकता है, अन्य जगह प्रकट नहीं होता। अन्धे को जैसे माणिक्य मिल जावे तो वह घर-घर बेचता फिरता है। स्वयं परख न होने से उसे कौड़ी भी मोल नहीं मिलता।

स्वयं को परखने की शक्ति न हो तो पारखियों को दिखाना चाहिए। अगर जीव प्रभु से चित्त लगाये तो वह वस्तु प्राप्त कर लेगा और नवनिधि की सामग्री हरि-नाम मिल जावेगी। बिना सतिगुरु के सहज दृष्टि नहीं मिलती जिससे घर में धन होते हुए भी जग भूखा मर रहा है।

तन-मन में शीतल शबद के निवास से शोक-वियोग नहीं होता। पराई वस्तु पर गर्व करके मनुष्य अपने अहंकार को दिखाता है। बिना गुरु से वस्तु की पहचान न होने से बार-बार जन्म-मरण के चक्कर में पड़ता है :

पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुखु होइ ॥
गुर का सबदु गुर थै टिकै होर थै परगटु न होइ ॥
अंन्हे वसि माणकु पइआ घरि घरि वेचण जाइ ॥
ओना परख न आवई अढु न पलै पाइ ॥
जे आपि परख न आवई तां पारखीआ थावहु लइओ परखाइ ॥
जे ओसु नालि चितु लाए तां वथु लहै नउ निधि पलै पाइ ॥
घरि होदै धनि जगु भुखा मुआ बिनु सतिगुर

सोझी न होइ ॥
सबदु सीतलु मनि तनि वसै तिथै सोगु विजोगु न कोइ ॥
वसतु पराई आपि गरबु करे मूरखु आपु गणाए ॥
नानक बिनु बूझे किनै न पाइओ फिरि फिरि आवै जाए ॥ *(पन्ना १२४९)*

गुरमुख के लिए हरि-नाम ही अमृत है। जीवों में शबद ही प्राण है जिससे प्रभु-मिलन होता है। मानव-जीवन की तुलना सावन मास से की जाती है। श्री गुरु रामदास जी इसका एक नादमय चित्र प्रस्तुत करते हैं :

सावणु आइआ झिमझिमा हरि गुरमुखि नामु धिआइ ॥
दुख भुख काड़ा सभु चुकाइसी मीहु वुठा छहबर लाइ ॥
सभ धरति भई हरिआवली अंनु जंमिआ बोहल लाइ ॥
हरि अचिंतु बुलावै क्रिपा करि हरि आपे पावै थाइ ॥ *(पन्ना १२५०)*

नाम-विहीन जीवन के गुरु नानक साहिब जी के श्लोक *'मरणि न मूरतु पुछिआ'* से नाम-जाप सहज जीवन के रूपांतरण के चित्र को श्री गुरु अरजन देव जी प्रस्तुत करते हैं :

धरति सुहावड़ी आकासु सुहंदा जपंदिआ हरि नाउ ॥
नानक नाम विहूणिआ तिन्ह तन खावहि काउ ॥
(पन्ना १२४७)

हमारे जीवन-मनोरथ का सूत्रधार कौन है? श्री गुरु अमरदास जी मार्गदर्शन करते हैं कि हे प्रभु! सारी दिव्य सुंदरता तुम्हारी देन और प्रकाश से भरपूर है। मेरा प्रदर्शन चतुराई और अहंकार का है। मुझमें अनेक कर्म करते हुए लोभ-मोह व्याप्त है। मेरे अहंकार का अंत नहीं। प्रभु स्वयं ही सब कुछ करता है। जो उसे रुचता है, वही भली बात है :

दाति जोति सभ सूरति तेरी ॥
बहुतु सिआणप हउमै मेरी ॥
बहु करम कमावहि लोभि मोहि विआपे हउमै कदे न चूकै फेरी ॥
नानक आपि कराए करता जो तिसु भावै साई गल चंगेरी ॥ *(पन्ना १२५१)*

सारंग राग की वार के पउड़ी छंदों में छंद क्रमांक ६ से ८ तक नाम-श्रवण की तथा ९ से १२ तक नाम-मनन की महिमा का वर्णन है। इनमें जपु जी साहिब की श्रवण (सुणिऐ) और मंने की पउड़ियों की शैली का अनुसरण किया गया है जिससे जपु जी साहिब की पउड़ियों का 'नाइ सुणिऐ' और 'नाइ मंनीए' के सन्दर्भ से भाव स्पष्ट हो जाता है। *'मंनै मारगि ठाक न पाइ'* को *'नाइ मंनिऐ दुरमति गई मति परगटी आइआ'* के रूप में स्पष्ट किया गया है।

राग सारंग में भक्त-बाणी में भक्त कबीर जी, भक्त नामदेव जी तथा भक्त परमानंद जी के शबद हैं। भक्त नामदेव जी का एक शबद विषय-रत मन के उद्‌बोधन का है। दूसरे शबद में भक्त नामदेव जी प्रभु को सख्य-भाव से सम्बोधित करते हैं। ठाकुर और सेवक अलग-अलग नहीं हैं। स्वामी पूर्ण है और सेवक उसका अंश है। तीसरे शबद में प्रभु द्वारा यह स्वीकार उक्ति है कि भक्त की महिमा उनसे अधिक है। प्रभु अपने भक्त के प्रेम-बंधन में है। भक्त परमानंद जी के शबद में विकार रहित दया से पूर्ण भक्ति का वर्णन है। श्री गुरु अरजन देव जी ने भक्त सूरदास जी की पंक्ति दी है, हे मन! हरि से विमुख लोगों का साथ छोड़ दो *"छाडि मन हरि बिमुखन को संगु ॥"* इस पावन पंक्ति से आगे पावन शबद की रचना श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी पावन बाणी से कर दी है।

भक्त कबीर जी के दो शबद भक्त-बाणी के आरंभ में हैं। प्रथम शबद में धन से उन्मत्त व्यक्ति को हरि-जाप का संदेश है। दूसरे में

(शेष पृष्ठ ४१ पर)

गुरबाणी चिंतनधारा : ३९

रहरासि साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

आसा महला ५ ॥
भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥

यह पावन शबद राग आसा में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का है।

गुरु पातशाह का पावन उपदेश है कि हे भाई! तुझे कितना सुंदर मानव शरीर मिला है! और प्रभु को मिलने का यह स्वर्णिम अवसर है! (जीव को यह नहीं भूलना चाहिए कि ऐसे सुनहरे अवसर बार-बार नहीं मिला करते। अतः इस सुनहरे मौके का भरपूर लाभ उठाने की प्रेरणा देते हुए गुरु साहिब समझा रहे हैं कि चौरासी लाख योनियों में मनुष्य-जीवन ही सर्वश्रेष्ठ है और इस देही को पाने हेतु तो देवते भी तरसते हैं, क्योंकि बाकी समस्त भोग-भूमियां हैं, केवल मनुष्य के पास ही कर्म-भूमि है, जिसमें नेक कर्म करते हुए तथा प्रभु-परमेश्वर की बंदगी करते हुए गुरु-कृपा से उस परमेश्वर को पाया जा सकता है अर्थात् उसकी सिफत-सलाह करते हुए उसी में लीन हुआ जा सकता है।

अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥१॥

गुरु पातशाह कलयुगी जीवों का मार्गदर्शन करते हुए संदेश देते हैं कि ईश्वर-प्राप्ति के उद्यम के बगैर तेरे समस्त क्रिया-कलाप और की गई मेहनत-मशक्कत व्यर्थ ही है, क्योंकि अन्य समस्त प्राप्तियों का तुझे कोई आत्मिक लाभ प्राप्त नहीं हो सकता। अतः साधसंगत में बैठकर केवल और केवल परमेश्वर की बंदगी करके ही उस प्रभु का सिमरन कर। *"भजु केवल नाम"* से अभिप्राय है कि सतसंगत भी नसीब हो जाये तब भी एकाग्रचित्त होकर प्रभु का नाम जप।

वस्तुतः मानव-मन की फितरत ऐसी है कि चंचल मन भटकाव में रहता है और प्राणी सतसंग में आकर भी पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए अक्सर हम हाजिर होकर भी गैर हाजिर रह जाते हैं, क्योंकि जिस कर्म के साथ चित्त का जुड़ाव नहीं उस कर्म का संस्कार ही नहीं बनता। अतः गुरु-उपदेशानुसार साधसंगत में चित्त जोड़कर प्रभु की उपासना कर।

सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥
जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥१॥रहाउ॥

हे भाई! इस संसार रूपी भवसागर से पार उतारने में जो-जो कार्य सहायक हैं वही उद्यम कर, क्योंकि केवल माया के बंधनों में यह (अमूल्य) जीवन व्यर्थ जा रहा है और माया का व्यवहार गुरबाणी आशयानुसार विचित्र है, यथा:

पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥
(पन्ना ४१७)

अतः ईश्वर के नाम से जुड़ने के अतिरिक्त इस माया के प्रभाव से बचने का कोई भी चारा नहीं है, जैसा कि गुरबाणी का पावन संदेश है:

त्रिसना बुझै हरि कै नामि ॥
महा संतोखु होवै गुर बचनी
प्रभ सिउ लागै पूरन धिआनु ॥ (पन्ना ६८२)

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर (राजस्थान)-३०२००४ फोन ०१४१-२६५०३७०*

अत: मानव-जीवन में करने योग्य सर्वोत्तम धर्म-कर्म पंचम पातशाह के चिंतनानुसार ये है:

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥ (पन्ना २६६)

अत: ईश्वर का नाम जपते हुए नेक कर्म करना ही मनुष्य का पुनीत कर्त्तव्य है।

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी की पावन बाणी भी हमें यही संदेश देती है कि नश्वर पदार्थों का मोह हमें ईश्वर से दूर करता है, यथा :

एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ (पन्ना ९२१)

वस्तुत: तृष्णालु व्यक्ति माया-संग्रह को ही जीवन का सार समझ लेता है और लालची व्यक्ति आजीवन अतृप्त ही रहता है। इस सन्दर्भ में शेख साअदी की ये पंक्तियां कितनी सार्थक प्रतीत होती हैं :

गुप्त चश्मे तंग दुनिया दार दा
या कनायत पुर कुनद या खाक गोर।

अर्थात् दुनिया भर की तंग आंखें दो चीजों से भर सकती हैं--एक संतोष से और दूसरी कब्र की मिट्टी द्वारा।

जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥
सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥

हे भाई! तू ईश्वर की वंदना नहीं करता, सिमरन नहीं करता, तूने प्रभु-प्राप्ति हेतु सेवा, संयम आदि कोई उद्यम नहीं किया। तूने मन को विकारों से रोकने का कोई प्रयास भी नहीं किया। तू न ही कोई कर्म-धर्म करता है और न ही तूने गुरु की सेवा कमाई है, न ही प्रभु-सिमरन किया है।

सेवा करके पहले इस मन रूपी बर्तन को साफ, पवित्र करना है, तभी ईश्वर नाम रूपी अमृत उसमें रस-बस सकता है।

कहु नानक हम नीच करंमा ॥
सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥४॥

पंचम पातशाह का पावन फरमान है, हे जीवो! प्रभु के दर पर अरदास-विनती करो कि हम मंदकर्मी जीव हैं, तेरी शरण में आये हैं। हे प्रभु! तू शरण आये की लाज रख।

वस्तुत: जब जीव का कर्त्ता-भाव मिट जाता है और वह प्रभु की शरण में आ जाता है तो कृपालु प्रभु उसके विकारों के सब बंधन काट कर उसकी लाज रखता है।

पा: १० ॥
कबियोबाच बेनती ॥ चौपई ॥

यह बाणी दसवें पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की है। अरदास (बिनती) अर्थात् अकाल पुरख परमेश्वर के सन्मुख प्रार्थना की गई है। चौपई अर्थात् चार पाद वाली बाणी।

हमरी करो हाथ दै रच्छा ॥
पूरन होइ चित की इच्छा ॥
तव चरनन मन रहै हमारा ॥
अपना जान करो प्रतिपारा ॥१॥

हे वाहिगुरु! अपना हाथ देकर मेरी रक्षा करो। मेरे मन की मुराद पूर्ण करो। आपके चरणों से मेरा चित्त (हृदय) जुड़ा रहे। मुझे अपना दास (सेवक) समझकर हर तरह से मेरी प्रतिपालना करो जी।

हमरे दुसट सभै तुम घावहु ॥
आपु हाथ दै मोहि बचावहु ॥
सुखी बसै मोरो परिवारा ॥
सेवक सिक्ख सभै करतारा ॥२॥

गुरु कलगीधर पातशाह उस परवरदिगार के चरणों में विनती करते हैं कि हे वाहिगुरु जी! मेरे--काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार रूपी पांच विकारों का समूल नाश करो। हे सर्वशक्तिमान प्रभु! अपना हाथ देकर मेरी रक्षा करो अर्थात्

इन विकारों से मुझे बचा लो। मेरा परिवार (सतसंगी-जन) सदैव सुखी बसे। ये गुरमुख परिवार के समस्त-जन तेरे ही सेवक हैं। चिन्तकों के चिन्तनानुसार सिक्ख परिवार से अभिप्राय (ईश्वरीय) ज्ञान को धारण करने वाले जीव। अत: मेरा यह गुरमुख परिवार सदा सुखी रहे।

मो रच्छा निज कर दै करियै ॥
सभ बैरन को आज संघरियै ॥
पूरन होइ हमारी आसा ॥
तोर भजन की रहै पिआसा ॥३॥

गुरु कलगीधर पातशाह अकाल पुरख के चरणों में विनम्र विनती करते हैं कि हे वाहिगुरु जी! आप अपना हाथ देकर मेरी रक्षा करो। मेरे समस्त वैरियों भाव इंसानियत के भक्षकों का समूल नाश कर दो। आपकी रहमत से मेरी यह मनोकामना पूर्ण हो कि मुझे हर पल तेरे ही सिमरन की प्यास लगी रहे।

वस्तुत: इस लोक में विचरण करते हुए सबकी मांग दुनियावी पदार्थों की रहती है। गुरु पातशाह कलयुगी जीवों का मार्गदर्शन करते हुए उस परमेश्वर के चरणों में समस्त सतसंगियों की रक्षा हेतु तथा विकारों के नाश की कामना करते हुए श्वास-श्वास प्रभु-सिमरन में जुड़े रहने की अरदास करते हैं। धन्य हैं वे जीव जिन्हें गुरु-कृपा से इस तरह की विनती करनी आ जाती है, क्योंकि मानव-जीवन दुर्लभ है और सदा कायम रहने वाले सुख की प्राप्ति गुरबाणी आशयानुसार तभी मुमकिन है। नौंवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी का पावन फरमान है:

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥
कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥
(पन्ना १४२७)

तुमहि छाडि कोई अवर न धियाऊं ॥
जो बर चहों सु तुम ते पाऊं ॥
सेवक सिक्ख हमारे तारीआहि ॥
चुनि चुनि सत्र हमारे मारीअहि ॥४॥

हे वाहिगुरु जी! आप मुझ पर ऐसी रहमत करो कि मैं आपको छोड़ कर किसी और की आराधना न करूं। जो भी आशीर्वाद चाहूं वो केवल आप से ही प्राप्त करूं। मेरे प्यारे सिक्ख जो आपकी सेवा में हैं उन्हें हे ईश्वर! कृपा करके इस संसार रूपी भवसागर से पार उतारो। मेरे समस्त दुश्मन जो मानवता के दोषी हैं, उनको मार मिटाओ!

आप हाथ दै मुझै उबरियै ॥
मरन काल का त्रास निवरियै ॥
हूजो सदा हमारे पच्छा ॥
श्री असिधुज जू करियहु रच्छा ॥५॥

हे वाहिगुरु जी! अपना मेहर भरा हाथ मेरे शीश पर रखो, दुष्टों-वैरियों भाव विकारों से बचा लो। मेरा मृत्यु-समय का भय तथा पीड़ा का निवारण करो। हे प्रभु! हर तरह से मेरे पक्ष में होकर मेरी सहायता करो। ईश्वर के महाकाल रूप का स्मरण करते हुए गुरु कलगीधर पातशाह अकाल पुरख के चरणों में विनती करते हैं कि हे ध्वज पर कृपाण के चिन्ह वाले महाकाल! हर मुसीबत में मेरी रक्षा करना।

राखि लेहु मुहि राखनहारे ॥
साहिब संत सहाइ पियारे ॥
दीन बंधु दुसटन के हंता ॥
तुम हो पुरी चतुर दस कंता ॥६॥

हे संत-पुरुषों के सदैव मददगार प्रभु! समस्त जीवों के रक्षक स्वामी हरि! मुझे हर मुसीबत से बचा लो। हे दीनों के बंधु, भाई, मित्र, मददगार तथा दुष्टों का संहार करने वाले प्रभु! आप ही चौदह पुरियों के (सात आकाश एवं सात पाताल) के स्वामी हो। तुम्हीं सारी सृष्टि के मालिक हो।

काल पाइ ब्रहमा बपु धरा ॥
काल पाइ सिव जू अवतरा ॥
काल पाइ कर बिसनु प्रकासा ॥
सकल काल का कीआ तमासा ॥७॥

महाकाल (प्रभु) के आदेशानुसार ही ब्रह्मा ने शरीर धारण किया। उसी ईश्वर के हुक्म से शिवजी ने अवतार धारण किया। उसी के हुक्म से विष्णु जी का प्रकाश हुआ। यह सारा जगत-तमाशा महाकाल प्रभु की ही रचना है।

जवन काल जोगी सिव कीओ ॥
बेद राज ब्रहमा जू थीओ ॥
जवन काल सभ लोक सवारा ॥
नमसकार है ताहि हमारा ॥८॥

जिस परमेश्वर ने योगीराज शिव जी की उत्पत्ति की अर्थात् शिव जी को जिसने योगीराज बनाया, जिस प्रभु ने वेदों के रचियता ब्रह्मा को बनाया, जिस अकाल पुरख ने समस्त जीवों की सृजना की, गुरदेव उसी प्रभु को नमस्कार करते हैं।

जवन काल सभ जगत बनायो ॥
देव दैत जच्छन उपजायो ॥
आदि अंति एकै अवतारा ॥
सोई गुरू समझियहु हमारा ॥९॥

जिस निरंकार ने सारे जगत की रचना की है, सृष्टि में देवता, दानव तथा यक्ष (देवताओं की एक प्रजाति) को पैदा किया, जो परमेश्वर जगत-रचना के आरंभ से अंत काल तक स्वयं ही सर्वत्र पूजनीय हस्ती है, सदैव एक रूप रहने वाला व्यापक पुरुष है, वही अकाल पुरख मेरा गुरु है। वास्तव में वह ईश्वर सम्पूर्ण रचना में समाहित है। भक्त नामदेव जी की पावन बाणी में भी यही भाव दृष्टिगत होता है:

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥
राम बिना को बोलै रे ॥१॥रहाउ॥
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे ॥
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥ (पन्ना ९८८)

नमसकार तिस ही को हमारी ॥
सकल प्रजा जिन आप सवारी ॥
सिवकन को सिवगुन सुख दीओ ॥
सत्रुन को पल मो बध कीओ ॥१०॥

गुरदेव उस परम पिता परमेश्वर को नमस्कार करते हैं जिस प्रभु ने सारी सृष्टि की सृजना स्वयं की है, जिस वाहिगुरु ने अपने सेवकों को हमेशा सुख तथा दैवी गुण प्रदान किए (आत्मिक गुणों से नवाजा) तथा वैरियों का पल भर में विनाश कर दिया।

गुरु कलगीधर पातशाह महाकाल स्वरूप सृष्टि के सृजनकर्त्ता समस्त सेवकों को आनंद प्रदान करने वाले तथा समस्त दुष्टों का संहार करने वाले सर्वशक्तिमान प्रभु के चरणों में नमस्कार करते हैं।

घट घट के अंतर की जानत ॥
भले बुरे की पीर पछानत ॥
चीटी ते कुंचर असथूला ॥
सभ पर क्रिपा द्रिसटि कर फूला ॥११॥

वह परमेश्वर अन्तरयामी है जो सबके दिलों की जानने वाला है (उससे कुछ भी छिपा हुआ नहीं है।) जीव के अन्त: करण में क्या चल रहा है वह प्रभु ही जानता है। वह समस्त अच्छे एवं बुरे के हृदय की व्यथा (पीड़ा) को जानता है। छोटे से छोटा प्राणी अर्थात् चींटी जैसे कीट से लेकर विशाल एवं भारी-भरकम शरीर वाले हाथी जैसे शरीर वालों पर भी अपनी कृपा-दृष्टि करके आनंदित होने वाले प्रभु को नमस्कार।

वह परमेश्वर सबके दिलों की जानने वाला है तथा समस्त प्राणियों के दिल की हालत को

पहचानता है तथा सबकी सार-सम्भाल कर प्रसन्न होता है।

संतन दुख पाए ते दुखी ॥
सुख पाए साधुन के सुखी ॥
एक एक की पीर पछानैं ॥
घट घट के पट पट की जानैं ॥१२॥

गुरदेव का पावन फरमान है कि वह परमेश्वर संतों को दुखी देखकर दुखी होता है और सुखी देखकर आनंद का अनुभव करता है। प्रत्येक की पीड़ा (दुख-तकलीफ) को अनुभव करने वाला प्रभु प्रत्येक प्राणी के हृदय की अर्थात् जो जगजाहिर नहीं होती उस बात, स्थिति को भी जानता है। वह परमेश्वर हरेक जीव के संकल्पों-विकल्पों को बाखूबी जानता है।

विचारणीय तथ्य यह है कि वह दुख-सुख प्रत्येक भाव से निर्लेप प्रभु, संतों के दुख में दुखी और सुख में सुखी कैसे होता है? गुरु पातशाह उस परमेश्वर के भक्त-वत्सल स्वभाव का जिक्र इस पउड़ी में करके हमें यह समझा रहे हैं कि किस तरह जो प्रभु के प्रति पूर्णतया समर्पित जीवन वाला है उसका सुख-दुख प्रभु-परमेश्वर का ही दुख-सुख है। संत-जन भी इस अवस्था को प्राप्त हो जाते हैं।

जब उदकरख करा करतारा ॥
प्रजा धरत तब देह अपारा ॥
जब आकरख करत हो कबहूं ॥
तुम मै मिलत देह धर सभहूं ॥१३॥

हे वाहिगुरु जी! जब कभी आप सृष्टि-रचना का संकल्प अथवा विचार करते हो तब ही सृष्टि पर अनंत शरीरों की रचना हुई। हे प्रभु! हे करता पुरख! जब कभी आप जी ने सृष्टि को समेटने का विचार किया तब-तब अनंत प्राणी आप में ही विलीन हो गये।

ईश्वर अथाह शक्तियों का मालिक जब कभी अपनी ही मौज में अपनी विस्थार-शक्ति का प्रयोग करता है तो सृष्टि पर बेअंत जीवों की सृजना हो जाती है और जब अपनी ही मौज में इस रचना को समेटना चाहता है तो सब जीव उसी अकाल पुरख में ही समा जाते हैं। गुरु पातशाह ने उपरोक्त पउड़ी में ईश्वर के निर्गुण एवं सगुण स्वरूप का तथा अपार शक्ति एवं मनमौजी स्वभाव का वर्णन बड़ी सुंदर शैली में किया है। इसी भाव को दृढ़ाती पावन बाणी 'सुखमनी साहिब' में पंचम पातशाह सुंदर वर्णन करते हैं :

सरगुन निरगुन निरंकार सुंन समाधी आपि ॥
आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि ॥
(पन्ना २९०)

राग सारंग

(पृष्ठ ३६ का शेष)

सर्वशक्तिमान प्रभु की विचित्र लीला का उल्लेख है। सारंग राग का समापन भक्त कबीर जी के सरस दुपदे से है। सभी प्राणियों के चरणों की विनम्रतापूर्वक धूल चाह कर सभी धर्मों के पुन्यों का फल प्राप्त कर सकते हैं। इस जर्जर शरीर का क्या भरोसा है जो थोड़ी-सी चोट से टूट जाता है! धन का भरोसा छोड़कर शुभ कर्मों का तैराने योग्य तुलहा बांधो :

हरि बिनु कउनु सहाई मन का ॥
मात पिता भाई बनिता हितु लागो सभ फन का ॥१॥रहाउ॥
आगे कउ किछु तुलहा बांधो किआ भरवासा धन का ॥
कहा बिसासा इस भांडे का इतनकु लागै ठनका ॥
सगल धरम पुंन फल पावहु धूरि बांछहु सभ जन का ॥
कहै कबीरु सुनहु रे संतहु इहु मनु उडन पंखेरू बन का ॥ (पन्ना १२५३)

गुरु-गाथा : १७

सूली बन गई शूल

*-डॉ. अमृत कौर**

श्री गुरु नानक देव महाराज जी एक नगर में पहुंचे। इस नगर में दो मित्र रहते थे। एक सज्जन स्वभाव का, सद्मार्ग पर चलते हुए साधसंगत करता था। जब श्री गुरु नानक देव जी इस नगर में आए तो वह प्रतिदिन उनके दर्शनों के लिए आने लगा। प्रातः-सांझ दोनों समय धर्मशाला जाता, गुरु जी के प्रवचन सुनता, सेवा करता, अलाही कीर्तन और कथा उसे असीम आनंद प्रदान करते। दूसरा मित्र कुसंगति में पड़ा हुआ व्यभिचार के मार्ग का अनुगामी था वासनाओं का गुलाम। दोनों अक्सर एक दूसरे को मिलते रहते। दोनों अपने आप को एक दूसरे से अधिक सुखी और प्रसन्न मानते। सज्जन मित्र साधसंगत में आनंद का बखान करता और दूसरा व्यभिचार से प्राप्त सुखों का। सज्जन मित्र ने उसे बहुत समझाया कि तू सतसंग में जाया कर, कुसंग अच्छा नहीं है। इससे नैतिक और आध्यात्मिक हानि होती है, पर उसने उसकी एक न सुनी और कुसंग के स्वादों की प्रशंसा करता। सज्जन मित्र ने कहा कि अच्छा, आज हम शाम को दोनों इस पेड़ के नीचे मिलेंगे और निर्णय करेंगे कि कौन-सा मार्ग अच्छा है। जो पहले आएगा वह दूसरे का इंतजार करेगा।

कुसंगी मित्र पहले पहुंच कर प्रतीक्षा करने लगा। प्रतीक्षा करते-करते थक कर जमीन कुरेदने लगा। जमीन कुरेदते-कुरेदते उसे एक मुहर मिली। उसका लालच बढ़ गया। थोड़ा और खोदने पर उसे एक भरा हुआ मटका मिला। उसने सोचा मोहरें होंगी, परन्तु जब ढक्कन खोल कर देखा तो वह कोयलों से भरा हुआ था।

दूसरा सज्जन व्यक्ति आया तो वह लंगड़ाकर चल रहा था। उसके पैर में कांटा चुभा था। कुसंगी मित्र ने कहा, "मैं सारा समय गुलछरे उड़ाता हूं, मौज-मस्ती करता हूं और मुझे मुहर मिली। तुम साधसंगत में जाते हो, शुभ कर्म करते हो, गुरु जी की तुम पर कृपा-दृष्टि है और तुम्हें कांटा चुभा, तो स्पष्ट है कि मेरा मार्ग अच्छा है। सज्जन व्यक्ति इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं हुआ। दोनों में वाद-विवाद होने लगा। अंत में निर्णय हुआ कि गुरु जी के पास जाकर स्पष्टीकरण करवाते हैं।

दोनों गुरु जी के पास पहुंचे। गुरु जी मुस्करा पड़े। उनके ओजस्वी व्यक्तित्व के सम्मुख दुर्जन मित्र झूठ न बोल पाया और उसने स्पष्ट रूप से अपने कुमार्गी होने के बारे में बता दिया। वह पूछने लगा कि मुझे कुमार्गी होने पर भी एक मुहर मिली है और इसे सज्जन होने पर कांटा चुभा है। यह माजरा क्या है? हमें तो कुछ समझ में नहीं आ रहा।

गुरु जी ने इस घटना-चक्र पर प्रकाश डालते हुए कहा, "तेरे पापों को एक मुहर का फल नहीं लगा। तेरे पापों की आंधी ने मुहरों से भरे मटके को कोयलों में परिवर्तित कर दिया है। पिछले जन्म में किसी ईश्वर के प्यारे को तूने एक मुहर दी थी। उस पुन्यात्मा की आशीष से मुहरें सहस्रगुणी होकर फलीं, पर जैसे-जैसे तूने पाप कमाया, तेरे पापों के फलस्वरूप मुहरें कोयला होती गईं। इस सज्जन व्यक्ति के शुभ कर्मों के कारण इसकी सूली की सजा कांटे में परिवर्तित हो गई। पिछले जन्मों के कुकर्मों के कारण इस जन्म में इसके गले में फांसी का फंदा पड़ना था, परन्तु

**१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०३*

सद्कर्मों के कारण इसके खोटे कर्म नष्ट होते गए और 'सूली' का 'शूल' रह गया। ज्यों-ज्यों तू वासनाओं में लिप्त हुआ तेरी रुचि बुराई की ओर बढ़ती गई और ज्यों-ज्यों यह सज्जन व्यक्ति शुभ कर्मों में, सतसंग में लगा इसकी वासनाएं शुभ तथा पवित्र होती गईं, शुभ कर्म इसे शुद्धता की ओर ले गए और सूली का शूल बन गया।" गुरु जी ने शबद गायन किया :

करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए ॥
जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे ॥ (पन्ना ९९०)

करणी कागद है, मन मसवाणी है। बुरे और भले दो लेख हैं जिनके द्वारा हमारे भाग्य का निर्माण होता है।

दैवी कीर्तन द्वारा दुर्जन व्यक्ति का मन शांत हुआ। अलाही कीर्तन ने जादू का काम किया। भ्रम का पर्दा हट गया। वह गुरु जी के चरणों पर गिर पड़ा। क्षमा-दान मांगा। सिक्ख सजा। नाम धारण किया। शुभ कर्मों में प्रवृत्त हुआ। कीर्तन के रस का पान करता उसका मन उज्जवल होने लगा। उसे अनुभूति होने लगी :

प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥
अंम्रित नामु रिद माहि समाइ ॥ (पन्ना २६३)

कविता

बाणी गुरू गुरू है बाणी . . .

गुरु अरजन परतक्ख हरि ने, डूबे पत्थर तारे।
'गुरु ग्रंथ' जहाज बनाकर, भवजल पार उतारे।
'मिटी धुंधु जगि चानणु होआ', आप किए उजियारे।
'वाहु वाहु बाणी निरंकार है', जिससे मिट गए धुंधूकारे।
अमृतसर, बाणी का सर है, बाणी से बलिहारे।
'बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥'
लासानी गुरु ग्रंथ साहिब है, फानी दुनिया प्यारे।
पापों के संग मति भरी को, 'नावै' संग उतारे।
चरण पड़े को, शरण पड़े को, 'गुरु ग्रंथ' सवारे।
शबद-शबद से गुरमुख पावे, नानक के दीदारे।
सतिगुर अरजन बाणी सदका, जगत जलंदे ठारे।
'बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥'
दूख, संताप, फिक्र न झोरा, भूख, ईर्ष्या जाए।
कंटक काल सताए नाही, जो गुरबाणी गाए।
शबद रूप नेजा है ऐसा, हरदम रक्ख-रखाए।
शबद-गुरु के हरदम रहते, गुरसिक्खों पर साये।
गोबिंदपुरी है सदा शबद में, सद गोबिंद सहारे।
'बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥'
'मन तूं जोति सरूपु है', गुरु अमरदास समझाएं।
'आतम रामु रामु है आतम', गुर बिन समझ न आए।
'जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥'
इक नाम 'जगदीश' जगत में, गुरु नानक दरसाए।
सतिगुर अरजन डूब रहों को, लाए आप किनारे।
'बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥'
'खैरु दीजै बंदगी' हमें, शेख फरीद अलाए।
'केवल राम नाम मनोरमं', भक्त जैदेव सुनाए।
'गोबिंद नामु मति बीसरै', भाई दर त्रिलोचन गाए।
'ईभै बीठलु ऊभै बीठलु', नामदेव फरमाए।
बाणी से अमृत बन जाते, सगले सागर खारे।
'बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥'
परम तत्त वही है जग पे, काया जिससे आई।
काया देव है, काया मंदिर, काया धूप धुखाई।
खोज-खोज ब्रह्मंडों को यह, काया नवनिधि पाई।
'ना कछु आइबो ना कछ जाइबो', पीपा दए दुहाई।
बाणी के बिन समझ न आएं, ब्रह्मंड के वरतारे।
'बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥'
चार वर्ण उपदेश गुरों से, ऐसे सांझे पाए।
सगले पंथ एकत्र हो गए, सगले भ्रम भुलाए।
मुसलमान, ब्राह्मण और शूद्र, एक जगह बिठलाए।
अल्लाह अल्लाह कहे व कोई बीठल बीठल गाए।
उनकी सुने पुकार पातशाह, जो जो इसे पुकारे।
'बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंम्रितु सारे ॥'

-श्री फकीर चंद जलंधरी, ५, रमेश कॉलोनी, जालंधर-१४४००१, मोः ९८१८-८८०५८

दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-२८

भट्ट काव्य परंपरा का वारिस - कवि श्री मल्लू भट्ट

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

भट्ट कवियों (हिंदी में भाट) की गुरु-घर के प्रति श्रद्धा बड़ी प्रसिद्ध रही है। सिक्ख परंपरा एवं इतिहास के अनुसार ग्यारह भट्ट- श्री कल सहार जी, श्री जालप जी, श्री कीरत जी, श्री भिखा जी, श्री सल जी, श्री भल जी, श्री नल जी, श्री गयंद जी, श्री मथरा जी, श्री बल जी एवं श्री हरिबंस जी सन् १५८१ ई. में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के दरबार में हाजिर हुए थे। हरियाणा एवं उत्तरी राजस्थान में सरस्वती नदी के किनारों पर बसने वाले ये सारस्वत ब्राह्मण विरूदावली एवं स्तुतिगान संबधी काव्य रचने के माहिर थे। इन भट्ट साहिबान ने पहले पांच गुरु साहिबान की स्तुति, महिमा-वर्णन एवं यशोगान किया है। इनके कुल १२३ सवैये 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' में पन्ना १३८९ से लेकर पन्ना १४०९ तक दर्ज हैं।

भट्ट कवियों की यह परंपरा दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक चली आई। दशमेश पिता के दरबारी कवियों में अनेक भट्ट कवि शामिल थे और शेष भट्ट साहिबान विरूदावली एवं यशोगान संबंधी उनकी काव्य-परंपरा का अनुकरण कर रहे थे।

दशमेश पिता के दरबारी भट्ट कवियों में एक नाम भट्ट मल्लू का आता है। दरबारी कवियों की सूची में इनका नाम 'मल्लू' मिलता है परन्तु ये मल्ल भट्ट के नाम से भी प्रसिद्ध थे। कवि श्री मल्लू भट्ट नूरपुर, कांगड़े के रहने वाले थे। इतिहास स्रोतों के अनुसार ये बाद में लाहौर आ गये थे। लाहौर के एक कवि श्री केशवदास ने अपने संगीत विषयक ग्रंथ- 'बुधि प्रकाश दर्पण' में श्री मल्ल भट्ट की प्रशंसा-स्तुति की है :

मल्ल भाट चरनन लगौं बांधयो ग्रंथ प्रबीन।

यह ग्रंथ संवत् १७४८ वि. अर्थात् सन् १६९१ ई में रचा गया था। इस ऐतिहासिक संकेत से स्पष्ट होता है कि श्री मल्लू जी या श्री मल्ल भट्ट कवि गुरु दशमेश पिता के समकालीन और एक बहुत ही उच्च कोटि के कवि थे। श्री केशवदास जैसे संगीतज्ञ ने जिसे अपने गुरु का स्थान दिया वह निश्चित रूप से श्रेष्ठ कवि एवं विद्वान तो होगा ही।

कवि श्री मल्लू जी ने दशमेश पिता के दरबार में रहते हुए क्या काव्य-रचना की, यह विवरण उपलब्ध नहीं है। संभवतः अनंदपुर साहिब को शत्रुओं द्वारा विनष्ट करते समय इनका सारा काव्य भी उस युद्ध में नष्ट हो गया होगा। सन् १७०४ ई. में अनंदपुर साहिब की जंग ने दशमेश पिता द्वारा तैयार करवाये हुए अधिकांश साहित्य को नष्ट कर दिया था। यदि यह सारा साहित्य आज मौजूद होता तो साहित्य का इतिहास ही कुछ और होता। यही नहीं, एक और दुर्भाग्य यह भी है कि कवि श्री मल्लू भट्ट की और कोई रचना भी प्राप्त नहीं होती, परंतु दशमेश पिता के दरबारी कवियों की सूची में दर्ज हो जाने के कारण कवि मल्लू भट्ट का नाम सदैव के लिए अमर हो गया है।

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना) पंजाब। मो: ०९४१७२-७६२७१*

आपका पत्र मिला

'बुजुर्ग श्रेणी विशेषांक' वर्तमान भारत की आवश्यकता

नवंबर २००९ 'गुरमति ज्ञान' अंक मेरे सामने है। 'बुजुर्ग श्रेणी विशेषांक' के अभी एक-दो लेख ही पढ़े हैं परंतु अपने आप को पत्र लिखने से नहीं रोक पाया, क्योंकि यह अंक वर्तमान भारत की अनिवार्य आवश्यकता लग रहा है। लेखकों का सार्थक चिंतन अति सराहनीय कदम है। ऐसे प्रयासों से ही सामाजिक एकता का ताना-बाना बुना जा सकता है, जिसकी आज देश को जरूरत है। मैं ब्राह्मण हूं। मुझे इस बात पर गर्व है कि सिक्ख भाई आज भी श्री गुरु नानक देव जी तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बताये मार्ग पर चलते हुए अपने धर्म का पालन करने में कहीं भी पीछे नहीं हैं। सबसे ज्यादा प्रसन्नता की बात यह है कि हमारे समाज तथा देश की एकता पर आंच नहीं आई है।

-पं. राम नरेश शुक्ल
सरला नगर, सतना (म. प्र.)।

लघु नाटिका 'मेरा घर-मेरा परिवार' आदर्श परिवार की वास्तविक रूप-रेखा

नवंबर २००९ 'गुरमति ज्ञान' मासिक की प्रति 'बुजुर्ग श्रेणी विशेषांक' प्राप्त हुई। मुझे अति प्रसन्नता हुई, जिसमें विद्वानों ने अपने लेखों के माध्यम से बुजुर्गों के लिए नव-चेतना का संचार किया है। इस पत्रिका से जहां बुजुर्गों का उत्साहवर्द्धन होगा वहीं उन्हें आपने पूरा मान-सम्मान देने का प्रयास भी किया है। बुजुर्गों के आशीर्वाद में ही स्वर्गमय संसार है-

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।

कुछ माननीय कवियों के माध्यम से कविता रूप में भरपूर सरल और शिक्षाप्रद सामग्री का समावेश करके पत्रिका को प्रशंसनीय बनाया है। इस पत्रिका में ५० से अधिक लेखकों ने सामग्री प्रस्तुत की है, वे सभी बधाई के पात्र हैं।

स. जगजीत सिंघ, प्रूफ रीडर, गुरमति ज्ञान ने लघु नाटिका 'मेरा घर-मेरा परिवार' का लेखन करके एक आदर्श परिवार की वास्तविक रूप-रेखा का वर्णन किया है और विशेष रूप से पुत्र-वधू 'मनजीत कौर' ने अपनी रूढ़िवादी सास रूपी माता का जीवन बदल दिया है, जिससे नरकमय बनता परिवार स्वर्गमय बन गया है। आशीर्वाद और शुभ कामनाएं।

'गुरमति ज्ञान' पत्रिका की उन्नति हेतु शुभकामनाएं। संपादक परिवार इस शुभ कार्य हेतु विशेष बधाई का पात्र है। लो आज मैं तुमको दिल से दुआ देता हूं :

तेरे जीवन में कहीं उदासी का कोई नाम न हो।
गुरु महाराज तुम सभी पर मेहरबान रहे,
तुम्हारे जीवन में सदा उजाला रहे,
अंधेरों का कभी नाम न हो।

-हरिचंद स्नेही,
२१९०/१२-१, सोनीपत।

और भी विशेषांक निकालें

'गुरमति ज्ञान' का नवंबर माह का अंक 'बुजुर्ग श्रेणी विशेषांक' पढ़ा, अच्छा लगा। हमारी इच्छा है कि आपके यहां से इसी तरह एक विशेषांक युवकों के लिए, महिलाओं के लिए निकले तो सर्वोत्तम है। युवकों के व्यक्तित्व परिष्कार के लिए, उन्हें सृजन से जोड़ने के लिए भी कुछ मैटर हर अंक में देते रहें तो सर्वोत्तम है।

-सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल
अग्रवाल न्यूज एजेंसी, हटा, दमोह।

'बुजुर्ग श्रेणी विशेषांक' अमिट छाप छोड़ेगा!

नवंबर माह का 'बुजुर्ग श्रेणी विशेषांक' प्राप्त हुआ। १७६ पन्नों में, यहां तक कि कवर पेज भी कविताओं से सुसज्जित, समस्त लेख-कविताएं मानो मोती पिरोये हुए हों। सचमुच यह विशेष अंक आपकी मेहनत, सूझबूझ, ज्ञान, प्रेम, जिंदादिली, प्रेरणा, प्रोत्साहन, हौंसले में बुजुर्गों की अमिट छाप छोड़ेगा। समस्त लेख-कविताएं काबिले-तारीफ हैं और इन सबकी सफलता के पीछे वाहिगुरु की रहमत के साथ-साथ आपकी प्रेरणा बहुत मायने रखती है। इसका पुखता परिणाम हम सबके सामने है इतने सुंदर एवं विशाल अंक की प्रस्तुति। वाहिगुरु अपनी रहमत, कृपा-दृष्टि हमेशा आप सब पर बनाये रखे। वह दिन दूर नहीं जब 'गुरमति ज्ञान' पत्रिका भी 'गुरमति प्रकाश' की तरह हर घर का श्रृंगार होगी तथा इस पत्रिका से प्रेरणा लेकर अनेकों के जीवन में बदलाव एवं सुधार आयेगा।

अभी पिछले ही दिनों एक बुजुर्ग, जिन्हें 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बनाया, (और जब उन्हें मालूम हुआ कि चंदा मैंने भिजवाया है) पत्रिका को पढ़ कर बेहद खुश हुए, कितनी आशीषें दीं और अगले अंक की प्राप्ति के बाद एक प्रेरणा लेकर हमारे घर आये। बड़े प्यार से बोले, "एक बेनती है, इंकार मत करना। यह पत्रिका बहुत ही अच्छी है, लेकिन इसे पढ़ने का फायदा तो तभी है जब हम इसकी शिक्षाओं को मानें।" फिर मुझसे पूछा, "क्या आपने डॉ. सत्येन्द्रपाल सिंघ का लेख पढ़ा है 'गुरसिक्खी बारीक है'?" मैंने कहां, "हां जी।" फिर बोले, "बस इतना-सा काम और करो, घर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश करवा लो।" मैंने कहा, "बाबा जी! यह घर बहुत ही छोटा है। प्रकाश करवाने की एक मर्यादा है। कैसे मुमकिन होगा?" बोले, "मैं नहीं जानता। यह मैं नहीं कह रहा, वाहिगुरु का ही हुक्म है। बंदा स्वयं क्या कर सकता है? न तुम मुझे मेम्बर बनाते न मैं यह पढ़ता और न ही आपसे बेनती करता।" मैंने कहा, "बाबा जी! हम कोशिश करेंगे।"

सबसे बड़ी बात तो यह है कि वे (बाबा जी) सिक्ख परिवार से नहीं हैं। फिर भी गुरबाणी की इतनी समझ और प्यार! उस दिन तो बस यही कह कर चले गए। कुछ दिन बाद फिर आये, रुमाला साहिब लेकर और साथ ही पहला 'मुखवाक' हुक्मनामा *"संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥"* बहुत ही सुंदर प्रिंट करवा कर जो कि कुछ ही दिन पहले हिन्दी में लिखवा कर ले गये थे, क्योंकि वे पंजाबी नहीं पढ़ सकते।

'गुरमति ज्ञान' से प्रेरित होकर उन्होंने इस तरह प्रेरित किया कि वाहिगुरु की रहमत से २ नवंबर, २००९ को श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाशोत्सव पर घर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पावन प्रकाश हो गया।

इनसे पहले अलग-अलग स्टेटस में २३ मेम्बर 'गुरमति ज्ञान' के आजीवन सदस्यता हेतु बनाए थे, लेकिन इन बुजुर्ग बाबा के कारण तो 'बुजुर्ग श्रेणी विशेषांक' मेरे लिए और भी विशेष हो गया। पत्रिका के माध्यम से आप सबके साथ सत्कारयोग्य डॉ. सत्येन्द्रपाल सिंघ जी, "गुरसिक्खी बारीक है" कालम के लेखक का भी तहे दिल से धन्यवाद करती हूं जिनके लेख से प्रेरणा लेकर इस तरह सबब बना।

यह सच है और इस हकीकत को कोई झुठला नहीं सकता कि सब कुछ करने-करवाने वाला वो परमेश्वर ही है। फिर भी इस दुनिया में जिसे वह माध्यम बना कर किसी से कुछ विशेष करवाता है उसका भी तहे दिल से शुक्रिया करना चाहिए।

-डॉ. मनजीत कौर, जयपुर।

जत्थेदार अवतार सिंघ पांचवीं बार शिरोमणि कमेटी के अध्यक्ष बने

अमृतसर : २५ नवंबर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष तथा अन्य पदाधिकारियों के वार्षिक चुनाव में जत्थेदार अवतार सिंघ को लगातार पांचवीं बार अध्यक्ष चुन लिया गया। उन्होंने अपने निकट प्रतिद्वंदी को ११४ मतों के अंतर से पराजित किया।

स्थानीय स. तेजा सिंघ समुद्री हाल में आयोजित वार्षिक समारोह का शुभारंभ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पावन उपस्थिति में तथा पांच सिंघ साहिबान की मौजूदगी में अपरान्ह १ बजे अरदास के साथ आरंभ हुआ। शिरोमणि कमेटी की सदस्य तथा पूर्व अध्यक्ष बीबी जगीर कौर ने शिरोमणि अकाली दल के उम्मीदवार जत्थेदार अवतार सिंघ का नाम अध्यक्ष पद के लिए पेश किया। दूसरी तरफ अन्य घटक दलों की ओर से स. मनजीत सिंघ कलकत्ता ने स. हरबंस सिंघ कंधोला का नाम पेश किया। शिरोमणि कमेटी के उपस्थित कुल १६४ सदस्यों में से जत्थेदार अवतार सिंघ को १३९ मत तथा स. हरबंस सिंघ कंधोला को २५ मत मिले। इस प्रकार ११४ मतों के अंतर से जत्थेदार अवतार सिंघ विजयी रहे। अन्य पदाधिकारियों में गत वर्ष की भांति वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद के लिए स. रघुजीत सिंघ (करनाल), करिष्ठ उपाध्यक्ष पद के लिए स. केवल सिंघ बादल तथा महासचिव पद के लिए स. सुखदेव सिंघ भौर का सर्वसम्मति से निर्वाचन कर लिया गया।

११-सदस्यीय कार्यकारिणी कमेटी में स. टेक सिंघ धनौला, स. राजिंदर सिंघ महिता, स. दिआल सिंघ कोलियांवाली, स. सुरजीत सिंघ गढ़ी, बीबी भजन कौर, स. निरमैल सिंघ, स. करनैल सिंघ पंजोली, स. मोहन सिंघ, स. गुरबचन सिंघ करमूंवाला, स. सूबा सिंघ तथा बीबी रविंदर कौर को शामिल किया गया। इससे पहले समारोह की आरंभता में परलोक गमन कर चुकी पंथक शख्सियतों को मूल-मंत्र का जाप कर श्रद्धांजलि दी गई, जिनमें शिरोमणि कमेटी सदस्य स. भगवंत सिंघ हरदोथला, पूर्व सदस्य स. हरदियाल सिंघ डब्बवाली, पूर्व सदस्य स. अजीत सिंघ अराइयांवाला तथा यू. पी. सिक्ख प्रतिनिधि बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष ज्ञानी हरिंदर सिंघ के नाम शामिल थे। अंत में अरदास के साथ समारोह शांतिपूर्वक सम्पन्न हुआ।

शिरोमणि कमेटी की वार्षिक सभा में कई प्रस्ताव पारित

अमृतसर : २५ नवंबर। जत्थेदार अवतार सिंघ द्वारा लगातार पांचवीं बार अध्यक्ष बनने के बाद वार्षिक सभा में कई प्रस्ताव पारित किए गए, जिनमें प्रथम था कि जून १९८४ में श्री दरबार साहिब पर किए गए फौजी हमले के दौरान सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी का जो बहुमूल्य खजाना (प्राचीन साहित्यक ग्रंथ तथा पावन सरूप) सेना अपने साथ ले गई थी, उसे तुरंत वापिस लेने के लिए आज की वार्षिक सभा भारत सरकार से मांग करती है। दूसरा प्रस्ताव था कि दस्तार तथा कृपाण आदि धार्मिक चिन्हों को लेकर विदेशों में जिन मुश्किलों का सामना सिक्खों को करना पड़ रहा है, उनके शीघ्र समाधान के लिए आज की साधारण सभा भारत सरकार तथा विशेषत: प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंघ से अपील करती है कि उनके द्वारा निजी दिलचस्पी लेकर विदेशी सरकारों तथा विशेष रूप से फ्रांस सरकार से मिलकर सिक्खों के धार्मिक चिन्हों पर लगाई गई पाबंदी को हटवाया जाए।

तीसरा प्रस्ताव, भारत सरकार से मांग की जाती है कि सिक्ख गुरुद्वारा एक्ट १९२५ की धारा ६२ व ६३ में संशोधन करते हुए शिरोमणि कमेटी के अध्यक्ष तथा पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों का कार्यकाल एक वर्ष से बढ़ाकर ढाई वर्ष किया जाए। चौथा प्रस्ताव, विदेशों में बसते बहुसंख्क सिक्खों की तीव्र इच्छा है कि उनकी भी शिरोमणि कमेटी में नुमाइंदगी होनी चाहिए। अत: आज की यह साधारण सभा गुरुद्वारा एक्ट की धारा ४३-आ में तुरंत आवश्यक संशोधन की मांग करती हुई विदेशी सिक्खों में से १० सिक्ख प्रतिनिधि नामजद करने की व्यवस्था की मांग करता है। पांचवां प्रस्ताव, भारत सरकार से मांग की जाती है कि प्रो. दविंदरपाल सिंघ (भुल्लर) को सुनाई गई फांसी की सजा को माफ किया जाए। अगला प्रस्ताव, नवंबर १९८४ में हुए सिक्ख कत्लेआम के दोषियों को कानूनी सजा दिए जाने की भारत सरकार से मांग करता हुआ आज का अधिवेशन पंजाब के मुख्यमंत्री स. प्रकाश सिंघ बादल द्वारा शहीदों की यादगार निर्मित किए जाने के ऐलान की प्रशंसा करता हुआ इस कार्य के लिए हर प्रकार का सहयोग दिए जाने का विश्वास दिलाता है। अन्य प्रस्तावों के अलावा एक प्रस्ताव के अनुसार सेक्शन ८७(१)-बी के प्रबंध अधीन गुरुद्वारों, जिनकी वार्षिक आमदन बजट २००९-१० के अनुसार २०,००,००० (बीस लाख) रुपए से अधिक है, को सेक्शन ८५ में तबदील करने की सिफारिश करता है।

गोल्डन ऑफसेट प्रेस का विस्तार किया गया

अमृतसर : १२ दिसंबर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा चालित गोल्डन आफसेट प्रेस का विस्तार करके छपाई के काम में तेजी लाई जा रही है। स्थानीय गुरुद्वारा रामसर साहिब की इमारत से बिलकुल सटी एक और इमारत बनाई गई है जहां पर "चार-रंगी आफसेट मशीन" ('के. बी. ए' रैपडा १०५ यूनीवर्सल) को स्थापित कर दिया गया है। इस नई मशीन का शुभारंभ जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष शि: गु: प्र: कमेटी ने किया। शुभारंभ अवसर पर उन्होंने कहा कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब के मान-सम्मान को मुख्य रखते हुए पंजाब सरकार द्वारा प्राइवेट पब्लिशरों द्वारा पावन स्वरूप की छपाई करने पर पाबंदी लगा देने के कारण शिरोमणि कमेटी के पावन स्वरूपों की संगत की मांग को पूरा करने के लिए आधुनिक मशीनों की आवश्यकता थी। नयी इमारत की कार सेवा करने वाले बाबा लाभ सिंघ जी का उन्होंने धन्यवाद किया। इस अवसर पर जानकारी देते हुए सचिव स. जोगिंदर सिंघ ने कहा कि यह मशीन जर्मन से मंगाई गई है तथा इसकी कीमत ४.५ करोड़ है। इसकी खरीद पर लगने वाली कस्टम ड्यूटी लगभग १.५ करोड़ भारत सरकार ने शिरोमणि कमेटी के आग्रह पर माफ की है। सचिव स. दलमेघ सिंघ ने बताया कि अब संगत की पावन स्वरूपों तथा अन्य लिट्रेचर की मांग यथाशीघ्र पूरी कर दी जाया करेगी। गोल्डन आफसेट प्रेस के मैनेजर स. प्रीतम सिंघ, प्रभारी स. दीपइंदर सिंघ तथा फोरमैन श्री नारायण सिंह ने बताया कि इस मशीन का सारा कंट्रोल कम्पयूटर के माध्यम से है तथा इसकी स्पीड कम से कम ३ हजार तथा अधिकतम १५ हजार शीट्स प्रति घंटा की है। उन्होंने बताया कि इस मशीन पर कम से कम १४X२८" तथा अधिकतम २८.४X४२" साइज के पेपर की छपाई की जा सकती है। इस अवसर पर शिरोमणि कमेटी के सदस्य साहिबान तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया।संपादक स. सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०१-२०१०